RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-10 अंक: 215 ता. 20 फरवरी 2022, रविवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

संक्षिप्त समाचार

मरु महोत्सव के इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज हुए एक साथ दो रिकार्ड

एजेंसी । राजस्थान के जैसलमेर में विश्वविख्यात मरु महोत्सव के इतिहास में इस बार पहला मौका रहा जब इण्डिया बुक ऑफ रिकार्ड में मरु महोत्सव-2022 में एक साथ दो रिकार्ड कायम हुए। आधिकारिक सूत्रों ने आज बताया कि मरु महोत्सव में इण्डिया बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज हुए दोनो ही नवाचार अपने आप में अनूठे एवं महोत्सव के मूल उद्देश्य से भरे होने के साथ ही देश के विभिन्न हिस्सों से आए सैलानियों एवं विदेशी मेहमानों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र रहे। जिला कलक्टर डॉ. प्रतिभा सिंह की पहल और विशेष प्रयासों से हुए ये दोनों ही आयोजन इण्डिया बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज किए गए हैं। यह जैसलमेर जिले और अबकि बार सम्पन्न चार दिवसीय मरु महोत्सव के लिए यादगार एवं ऐतिहासिक उपलब्धि है। डॉ. सिंह ने इस अपूर्व उपलब्धि को अविस्मरणीय बताते हुए इसमें सहभागिता निभाने वाली सभी संस्थाओं, कलाकारों, उष्ट्रपालकों, आयोजन को आशातीत सफलता देने में जी जान से जुटे रहे सभी अधिकारियों, कार्मिकों एवं सभी व्यक्तियों के प्रति आभार जताया है और कहा है कि इस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियों से जैसलमेर के पर्यटन विकास को खासा सम्बल प्राप्त हुआ है और मरु महोत्सव नई पहचान के साथ उभरने लगा है।

भाजपा ने मिजोरम सरकार पर मनरेगा के धन के दुरुपयोग का आरोप लगाया, राज्य सरकार ने भी रखा अपना पक्ष

एजेंसी । भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की मिजोरम इकाई ने मुख्यमंत्री जोरामथंगा के नेतृत्व वाली मिजो नेशनल फ्रंट (एमएनएफ) सरकार पर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी (एमजीएनआरईजी) कानून का ''उल्लंघन करने और इसके धन का ''दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। राज्य सरकार ने हालांकि इन आरोपों से इनकार किया और कहा कि उसने दिशा-निर्देशों के अनुसार काम किया और धन का दुरुपयोग नहीं किया। भाजपा महिला मोर्चा की मिजोरम इकाई की अध्यक्ष एवं केंद्रीय योजना निगरानी एवं सतर्कता उपाध्यक्ष एफ. लालरेमसंगी ने शुक्रवार को संवाददाताओं से कहा कि मनरेगा योजना की निगरानी एवं क्रियान्वयन निकाय के गठन और राज्य में धन के उपयोग में ''अनियमितताएं हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार ने मनरेगा अधिनियम के कार्यान्वयन की नियमित निगरानी और समीक्षा के लिए मिजोरम राज्य रोजगार गारंटी परिषद का गठन किया, लेकिन महिला सदस्यों की नियुक्ति के संबंध में दिशा-निर्देशों को पूरा करने में ''विफल रही। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा राज्य रोजगार गारंटी परिषद में गैर-सरकारी सदस्यों में से कम से कम पांच महिलाओं को मनोनीत किया जाए। इस बीच, मिजोरम के ग्रामीण विकास मंत्री लालरुअटकिमा ने इन आरोपों से इनकार किया और दावा किया कि राज्य रोजगार गारंटी परिषद का गठन केंद्रीय दिशा-निर्देशों के अनुसार किया गया है। उन्होंने कहा कि गैर-सरकारी सदस्यों में आवश्यक महिला सदस्यों को पहले ही नियुक्त किया जा चुका है, क्योंकि मौजूदा दिशा-निर्देशों के अनुसार गैर-सरकारी सदस्यों में कम से कम एक तिहाई महिलाएं होनी चाहिए। उन्होंने इन आरोपों का भी खंडन किया कि पार्टी को मजबूत करने के लिए । धन का दुरुपयोग किया गया था। लालरुअटकिमा ने कहा, ''राज्य रोजगार गारंटी परिषद का गठन दिशा-निर्देशों के अनुसार किया गया है और धन का दुरुपयोग नहीं किया गया है। अनुसार किया गया है और धन का दुरुपयोग नहीं किया गया है।

बायो-सीएनजी संयंत्र गोबर-धन संयंत्र का वर्चुअल उद्घाटन

मोदी ने इंदौर में एशिया के सबसे बड़े बायो-सीएनजी प्लांट गोबर-धन का किया उद्घाटन,

इंदौर।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 100 शहरों में किसान ड्रोन के उद्घाघटन के बाद आज इंदौर में एशिया के सबसे बड़े बायो-सीएनजी संयंत्र गोबर-धन संयंत्र का वर्चुअल उद्घाटन किया। वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कहा कि बायो-सीएनजी संयंत्र से ईधन बनाने की पहल इस समाज के लिए और हमारे पर्यावरण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि गांवों में घरों, जानवरों और खेतों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थ एक तरह से धन के समान हैं। पीएम मोदी ने कहा कि आने वाले 2 साल में देश के 75 नगर निगमों में ऐसे गोबर-धन बायो-सीएनजी प्लांट बनाने का काम तेजी से किया जा रहा है और इस अभियान से भारत के शहरों को स्वच्छ, प्रदूषण मुक्त, स्वच्छ ऊर्जा के निर्माण में एक लंबा और सराहनीय सफर तय करेगा। इस मामले में प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से मिली जानकारी के अनुसार पीएम नरेंद्र मोदी के सोच के मुताबिक नगरपालिका ठोस कचरा आधारित गोबर-धन संयंत्र शहरी स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के तहत कचरा मुक्त शहर बनाने की दिशा में एक शानदार पहल है। पीएमओ के मुताबिक गोबर-धन संयंत्र से प्रति दिन लगभग 17,000 किलोग्राम सीएनजी और 100 टन जैविक खाद का उत्पादन करने में क्षमता होगा। पीएमओ के अनुसार इस संयंत्र से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और उर्वरक के रूप में जैविक खाद के उत्पादन के साथ हरित ऊर्जा को बढ़ावा मिलेगा। वहीं इस प्लांट के जरिए एक साल में 1 लाख 30 हजार टन कार्बन डाइ आक्साइड के उत्सर्जन को कम किया जा सकेगा।

कार्बन डाइ आक्साइड के उत्सर्जन को कम किया जा सकेगा।

कुमार विश्वास को केंद्र सरकार से मिली 'वाई कैटेगरी की सुरक्षा

एजेंसी । केंद्र सरकार ने आम आदमी पार्टी के पूर्व नेता कुमार विश्वास की सुरक्षा को बढ़ा दिया है। केंद्र सरकार ने कुमार विश्वास को ड्ढ कैटेगरी की सुरक्षा मुहैया कराई है। 'वाई श्रेणी की सुरक्षा के तहत चार निजी सुरक्षा अधिकारी हर समय विश्वास की सुरक्षा में तैनात रहेंगे। सूत्रों ने कहा कि विश्वास ने 'आप के संयोजक तथा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ आरोप लगाए थे, जिसके मद्देनजर खुफिया जानकारियों के आधार पर केंद्र ने विश्वास की सुरक्षा और उन्हें होने वाले संभावित खतरों की समीक्षा की। विश्वास ने आरोप लगाते हुए कहा था कि, अरविंद केजरीवाल पंजाब में अलगाववादियों के समर्थक थे। केजरीवाल ने एक बार उनसे कहा था कि वे या तो पंजाब के मुख्यमंत्री बनेंगे या स्वतंत्र राष्ट्र खालिस्तान के पहले प्रधानमंत्री बनेंगे। लेकिन केजरीवाल ने इन आरोपों को खारिज किया है। कुमार के बयान पर सियासी बवाल मच गया है। पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कुमार विश्वास के दावे की जांच की मांग की थी। साथ ही कहा कि राजनीति एक तरफ, पंजाब के लोगों ने अलगाववाद से लड़ते हुए भारी कीमत चुकाई है। पीएम को हर पंजाबी की चिंता दूर करने की जरूरत है। पंजाब में रविवार को विधानसभा चुनाव के लिये मतदान होना है। पंजाब में रविवार को विधानसभा चुनाव के लिये मतदान होना है।

आतंकवादी बताए जाने का केजरीवाल ने दिया जवाब, कहा-यही आतंकी बना रहा है स्कूल

एजेंसी ।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि उनकी सरकार देश के कल्याण के लिए राजनीतिक विचारधाराओं को दरकिनार कर शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी ढांचे में सुधार करने में मदद के लिए अन्य राज्यों की सरकारों को सहयोग देने को तैयार है। केजरीवाल ने शनिवार को दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 12,430 कक्षाओं (क्लासरूम) के शुभारंभ के अवसर पर यह बात कही। मुख्यमंत्री ने कहा, ''मैं आज एक पेशकश कर रहा हूं। अगर कोई राज्य सरकार, फिर चाहे वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की हो या कांग्रेस के नेतृत्व वाली, अपने शिक्षा के बुनियादी ढांचे में सुधार करना चाहती है, तो हम शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया को उन्हें ऋण के रूप में देने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा, ''इसी तरह यदि कोई राज्य सरकार मोहल्ला क्लीनिक, साजो सामान युक्त सरकारी अस्पताल बनाना चाहती है, तो हम स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन को उन्हें ऋण के रूप में देने के लिए तैयार हैं। केजरीवाल का यह बयान ऐसे समय आया है जब उनकी पार्टी पंजाब जैसे राज्य में विधानसभा चुनाव लड़ रही है। उन्होंने कहा, ''हम हर राज्य में चुनाव नहीं लड़ते हैं। हम चाहते हैं कि देश तरक्की करे और हम राज्य सरकारों की मदद करने के लिए तैयार हैं। हम चाहते हैं कि भ्रष्टाचार खत्म हो। आम आदमी पार्टी (आप) के पूर्व नेता कुमार विश्वास द्वारा पंजाब में अलगाववादियों का समर्थन करने का आरोप लगाए जाने के बाद केजरीवाल भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के निशाने पर आ गए हैं। केजरीवाल ने कुमार विश्वास के आरोपों को हास्यास्पद करार दिया है। दिल्ली के मुख्यमंत्री ने खुद पर लगे आरोपों के बारे में बात करते हुए कहा कि वह शिक्षा प्रणाली और स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं। केजरीवाल ने कहा, '' वे जिसे आतंकवादी कह रहे हैं, उसने आज 12,430 स्मार्ट क्लासरूम देश को समर्पित किए। यहां अब अमीर और गरीब के बच्चे एक साथ बैठ कर पढ़ेंगे। जिन्हें वे आतंकवादी कह रहे हैं,वह बाबा साहेब और भगत सिंह के सपने पूरे कर रहा है। केजरीवाल ने आरोप लगाया कि राजनेता स्कूलों से डरते हैं। उन्होंने कहा, ''इन स्कूलों में कट्टर देशभक्तों को तैयार किया जा रहा है। पांच-दस साल बाद जब वे वोट देंगे तो वे जाति या धर्म के आधार पर नहीं बल्कि देश की प्रगति के लिए वोट देंगे। केजरीवाल ने इस मौके पर स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह का जिक्र किया और कहा, उन्होंने इंकलाब जिंदाबाद का नारा दिया था। मैं इंकलाब जिंदाबाद, शिक्षा क्रांति जिंदाबाद का नारा दे रहा हूं। मुख्यमंत्री ने दावा किया कि पिछले सात वर्षों में, दिल्ली सरकार ने 20,000 क्लासरूम का निर्माण किया है, ।

जो इस अवधि के दौरान सभी राज्य और केंद्र सरकारों द्वारा बनाए गए क्लासरूम से अधिक है। केजरीवाल ने इससे पहले दावा किया कि साथ ही उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी के स्कूलों में 12,430 आधुनिक कक्षाओं के उद्घाटन से ऐसे लोगों को करारा जवाब मिलेगा।

साम्बा विधानसभा क्षेत्र से बाहर होने पर खुश हैं पुरमंडल क्षेत्र के लोग

साम्बा । परिसीमन आयोग की ड्राफ्ट रिपोर्ट के अनुसार साम्बा विधानसभा हलके का पुरमंडल क्षेत्र नए परिसीमन से अब विजयपुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र में शामिल हो गया है। इसी सिलसिले में पुरमंडल के डीडीसी (जिला विकास परिषद) के सदस्य अवतार सिंह के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व कैबिनेट मंत्री चंन्द्र प्रकाश गंगा से मिला। उन्होंने कहा कि इलाके के लोग साम्बा विधानसभा चुनाव क्षेत्र से जुड़े होने के कारण अपने आपको अलग-थलग महसूस करते थे व दुखी थे। डीडीसी अवतार सिंह व अन्य लोगों ने पूर्व मंत्री चन्द्र प्रकाश गंगा को इसके लिए धन्यवाद दिया व कहा कि उनके प्रयास से ही पुरमंडल क्षेत्र के लोगों को न्याय दिलाने में मदद मिली है। प्रतिनिधिमंडल में अवतार सिंह के साथ आए भाजपा के मंडल प्रधान गिरधारी लाल शर्मा, महामंत्री नारो राम, सरपंच पूरण चंद्र, नरेन्द्र सिंह, सोनू, अमरचंद, विक्की शर्मा, प्रतिनिधिमंडल को गंगा ने भी आश्वासन दिया कि वह जल्द ही क्षेत्र का दौरा कर लोगों की मूलभूत समस्याओं को जानने और विकास कार्यों की समीक्षा कर जनसमस्याओं का निराकरण कराने में सहयोग करेंगे ।

चुनावी घोषणा पत्र को लेकर सुप्रीम कोर्ट में दायर हुई याचिका

नई दिल्ली। राजनीतिक दलों को उनके चुनावी घोषणा पत्र के प्रति जवाबदेही तय करने तथा अमल नहीं करने पर मान्यता रद्द करने का निर्देश देने की मांग को लेकर शनिवार को उच्चतम न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की गई। वकील अश्विनी कुमार उपाध्याय की ओर से दायर इस याचिका में केंद्र सरकार और चुनाव आयोग को यह निर्देश देने की गुहार लगाई गई है कि वो राजनीतिक दलों के सत्ता में आने पर उन्हें अपने चुनावी घोषणा पत्र पर अमल कराने को लेकर आवश्यक कदम उठाएं। घोषणा पत्र पर अमल नहीं करने वाले दलों की मान्यता रद्द कर दी जाए। उपाध्याय का आरोप है कि चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों द्वारा लुभावने वादे किए जाते हैं, लेकिन सत्ता में आने के बाद वे जनता की कई बुनियादी जरूरतों से संबंधित वादों पर भी अमल नहीं करते। इस प्रकार लोकतंत्र का आधार कमजोर होता है। याचिकाकर्ता ने शीर्ष अदालत से गुहार लगाई है कि वह चुनाव आयोग और केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्रालय को इस मामले मान्यता प्राप्त और पंजीकृत राजनीतिक दलों को अपने घोषणा पत्र पर अमल के मामले में नियंत्रित करने के लिए आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दें। याचिका में राजनीतिक दलों के घोषणापत्र और सत्ता में आने पर उसे लागू करने के सभी पहलुओं पर गौर कर संबंधित पक्षों को जरूरी निर्देश देने गुहार लगाई गई है।

जम्मू कश्मीर में धमी हुई कारोना की गति, 69,197 लोगों की जांच में 166 नए मामलों की पुष्टि

जम्मू ।

जम्मू कश्मीर में कोरोना महामारी संक्रमण का प्रकोप धीरे-धीरे कम हो रहा है। आज 69,197 लोगों की कोरोना जांच हुई जिसमें 166 नए कोरोना संक्रमितों की पुष्टि हुई। जम्मू कश्मीर में कोरोना का आंकड़ा 4,52,155 पर पहुंच गया है। जम्मू कश्मीर में आज किसी भी कोरोना संक्रमित की मृत्यु की सूचना नहीं है। जम्मू कश्मीर में आज 23,670 लोगों को कोरोना वैक्सीन की डोज लगाई गई। तक जम्मू कश्मीर में 2,13,36,129 लोगों को कोरोना वैक्सीन लगाई जा चुकी है। इनमें से अब तक 45 वर्ष के आयु वर्ग क ` 2,04,88,144 लोगों को वैक्सीन लगाई गई है। आज भी 18 जिले कोरोना प्रभावित रहे। आज कश्मीर संभाग के कुलगाम और शोपियां जिले से कोरोना का कोई भी नया मामले सामने नहीं आया है। जम्मू कश्मीर में 4838 लेवल 1 और लेवल 2 के कोविड बेड उपलब्ध हैं जिनमें से आज केवल 67 बेड पर मरीज उपचाराधीन हैं। अब तक श्रीनगर में 907, बारामूल्ला में 304, बडग़ाम में 237, पुलवामा में 201, कुपवाड़ा में 174, अनंतनाग में 219, बांदीपुरा में 118, गांदरबल में 84, कुलगाम मे 118, शोपियां में 60 मौतें हुई हैं जबकि जम्मू संभाग में जम्मू में 1222, ऊधमपुर में 147, राजौरी में 248, डोडा में 144, कठुआ में 166, साम्बा में 125, किश्तवाड़ में 45, पुंछ में 110, रामबन में 69 और रियासी में 48 लोगों ने उपचार के दौरान दम तोड़ा है। जम्मू संभाग से आज 103 और कश्मीर संभाग से 63 नए कोरोना के मामलों की पुष्टि हुई है। जम्मू कश्मीर में अब तक 4,52,155 कोरोना के पाजिटिव मामले हो गए हैं, इनमें से 1,65,361 जम्मू संभाग और 2,86,794 मामले कश्मीर संभाग से संबंधित हैं। जम्मू कश्मीर में 2,294 मामले एक्टिव हैं, इनमें से जम्मू संभाग में 1168 और कश्मीर संभाग में 1126 मामले एक्टिव हैं। जम्मू कश्मीर में अब तक 4,45,115कोरोना संक्रमित ठीक हुए हैं, ।

जिनमें जम्मू संभाग से 1,61,869 और कश्मीर संभाग से 2,83,246 रोगी ठीक हुए हैं। आज 469 कोरोना संक्रमित ठीक हुए हैं, इनमें कश्मीर संभाग से 227 और जम्मू संभाग से 242 संक्रमित स्वस्थ हुए हैं। जम्मू कश्मीर में अब तक कोरोना वायरस की 2,27,53,717 सैंपल की रिपोर्ट उपलब्ध हुई है जिनमें से 2,23,01,562 मामले नैगेटिव पाए गए हैं। वहीं 60,40,146 लोगों को निगरानी में रखा गया है जबकि होम क्वारंटाइन में 33,664 लोगों को रखा गया है और 2,294 संक्रमित अस्पताल आइसोलेशन में उपचाराधीन हैं। घरों में 4,46,263 लोगों को निगरानी में रखा गया है जबकि 55,53,179 लोगों ने निगरानी अवधि पूरी कर ली है। सबसे अधिक 51 नए मामले जम्मू संभाग के जम्मू जिले से सामने आए हैं जबकि कश्मीर संभाग के श्रीनगर जिले से सबसे अधिक 21 नए मामलों की पुष्टि हुई है। बारामूल्ला में 4, बडगाम में 4, पुलवामा में 3, कुपवाडा में 13, अनंतनाग में 6, बांदीपोरा में 10, 8, साम्बा में 1, किश्तवाड़ में 2, पुंछ में 3, रामबन में 5 और रियासी में 4 कोरोना पाजिटिव के मामले सामने आए हैं। अनंतनाग में 6, बांदीपोरा में 10, गांदरबल में 2, जम्मू में 51, ऊधमपुर में 5, राजौरी में 1, डोडा में 23, कठुआ में 8, साम्बा में 1, किश्तवाड़ में 2, पुंछ में 3, रामबन में 5 और रियासी में 4 कोरोना पाजिटिव के मामले सामने आए हैं।

महाराष्ट्र: सिंधुदुर्ग में हत्या के मामलों में फिर जांच को लेकर गृहमंत्री से मिलेंगे शिवसेना नेता

एजेंसी ।

शिवसेना ने शनिवार को कहा कि पार्टी के नेता महाराष्ट्र के गृह मंत्री दिलीप वाल्से पाटिल के साथ मुलाकात कर सिंधुदुर्ग जिले के हत्या के मामलों को फिर से खोलने की मांग करेंगे । सिंधुदुर्ग केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता नारायण राणे का गृह जिला है । रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग निर्वाचन क्षेत्र से शिवसेना सांसद और पार्टी प्रवक्ता विनायक राउत ने राणे का परोक्ष रूप से जिक्र करते हुए कहा कि पूरा महाराष्ट्र जानता है कि हत्या और जबरन वसूली में कौन शामिल था। राउत ने कहा, ''शिवसेना के खिलाफ भ्रष्टाचार और हत्या का आरोप लगाना हास्यास्पद है । क्या वह अपना अतीत भूल चुके हैं । उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले नौ सालों में सिंधुदुर्ग जले में सात ''राजनीतिक हत्यायें हुयी है। उन्होंने कहा, ''हम प्रदेश के गृह मंत्री से इन मामलों को दोबारा खोलने की मांग करेंगे महाराष्ट्र की महा विकास आघाड़ी सरकार की अगुवाई शिवसेना कर रही है जिसमें राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और कांग्रेस भी शामिल है । वाल्से पाटिल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के विधायक हैं । यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए राउत ने एक वीडियो दिखाया जिसमें महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और भाजपा नेता किरीट सोमैया राणे के खिलाफ बोल रहे हैं। राणे पहले कांग्रेस में थे। शिवसेना और राणे के बीच जुबानी जंग उस वक्त तेज हो गयी जब राणे ने शुक्रवार को कहा कि उन्हें पता चला है कि उप नगर बांद्रा में स्थित मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के निजी आवास मातोश्री में (रहने वाले) ''चार लोगों के लिए ईडी नोटिस तैयार है। कि उप नगर बांद्रा में स्थित मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के निजी आवास मातोश्री में (रहने वाले) ''चार लोगों के लिए ईडी नोटिस तैयार है।

विपक्षी दलों के शासन में बुंदेलखंड में कट्टे बनते थे, अब मिसाइल बनने जा रही है :अमित शाह

एजेंसी । केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री तथा भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने शनिवार को विपक्षी दलों समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि इनके शासन में बुंदेलखंड में कट्टे (अवैध देशी तमंचा) बनते थे, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यहां मिसाइल बनाने जा रहे हैं। शाह ने यहां एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि सपा, बसपा और कांग्रेस के शासन में बुंदेलखंड में कट्टा बनाया जाता था और गोलियां भी बनाई जाती थीं और अब वहां मोदी जी मिसाइल और गोले (गोला) बनाने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले कट्टा लोगों को डराता था, लेकिन अब यहां जो मिसाइल बनेगी वह पाकिस्तान के टैंक को उड़ा देगी। विपक्षी दलों पर परियोजनाओं में लेटलतीफी और बंदरबांट का आरोप लगाते हुए शाह ने कहा कि जिस योजना की आधारशिला प्रधानमंत्री मोदी ने रखी है, उसका उद्घाटन उन्होंने खुद किया। उन्होंने कहा, उत्तर प्रदेश में कुछ सिंचाई योजनाएं मेरे जन्म से पहले शुरू हो गईं, लेकिन वे पूरी नहीं हो सकीं, मोदी और योगी सरकार ने उन्हें पांच साल में पूरा किया है। उन्होंने कहा, मैं सपा और बसपा से पूछना चाहता हूं कि उन्होंने बुंदेलखंड के जल संकट के लिए क्या किया है, इस पर 15 साल के अपने शासन की रिपोर्ट पेश करें। शाह ने कहा कि मोदी ने बुंदेलखंड के जल संकट को दूर करने के लिए कई परियोजनाओं लागू की। उन्होंने कहा, मैं बुंदेलखंड के लोगों से कहना चाहता हूं । कि केन बेतवा जल परियोजना से पीढ़ियों तक यहां जल का संकट नहीं होगा। उन्होंने कहा, पहले और दूसरे चरण में सपा और बसपा का सफाया हो गया है।

जबतक हम छत्रपति महाराज की शिक्षाओं को अनुपालन करेंगे, तबतक हमें कोई गुलाम नहीं बना सकता: फडणवीस

एजेंसी ।

महाराष्ट्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शनिवार को ठाणे शहर में छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पर आयोजित शिव जयंती कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस मौके पर राज्यमंत्री कपिल पाटिल, भाजपा की नगर इकाई के अध्यक्ष और विधान पार्षद निरंजन देवखरे, विधायक संजय केलकर और अन्य स्थानीय नेता उनके साथ मौजूद रहे। भाजपा नेता ने सबसे पहले शहर के केंद्र में स्थित मसुंडा झील के बीच बनी मराठा राजा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। संवाददाताओं से बातचीत करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री फडणवीस ने इस मौके पर दुनिया भर के शिव भक्तों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि राज्य और देश छत्रपति शिवाजी महाराज से प्रेरित होता है और उनकी शिक्षाओं से निर्देशित होता है। भाजपा नेता ने कहा, ''जबतक हम छत्रपति महाराज की शिक्षाओं को अनुपालन करेंगे एवं समान और अच्छा शासन स्थापित करेंगे, तबतक हमें कोई गुलाम नहीं बना सकता है। भाजपा नेता ने कहा, ''जबतक हम छत्रपति महाराज की शिक्षाओं को अनुपालन करेंगे एवं समान और अच्छा शासन स्थापित करेंगे, तबतक हमें कोई गुलाम नहीं बना सकता है।

संक्षिप्त समाचार

कुमार विश्वास के आरोपों के बाद बढ़ी केजरीवाल की मुश्किलें, घर के बाहर युवा कांग्रेस विरोध का प्रदर्शन

नई दिल्ली। कांग्रेस की युवा शाखा ने शनिवार को आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास के नजदीक विरोध प्रदर्शन किया। आप के पूर्व नेता और कवि कुमार विश्वास द्वारा केजरीवाल पर पंजाब में अलगाववादियों का समर्थन करने संबंधी आरोप लगाए जाने के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री पर कांग्रेस और भाजपा दोनों ने हमला किया है। आप सुप्रीमो ने कुमार विश्वास के आरोपों को 'हास्यास्पद' बताते हुए खारिज कर दिया और कहा कि देश के 'भ्रष्ट' लोगों ने उनके खिलाफ हाथ मिला लिया है। भारतीय युवा कांग्रेस (आईवाईसी) के प्रदर्शनकारियों ने केजरीवाल और आप के खिलाफ नारेबाजी करते हुए चंदगीराम अखाड़े से मुख्यमंत्री आवास तक मार्च किया। हालांकि, पुलिस ने उन्हें बैरिकेडिंग पर रोक दिया। प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए भारतीय युवा कांग्रेस के अध्यक्ष श्रीनिवास बी. वी. ने कहा कि हर कोई चाहता है कि केजरीवाल उन आरोपों का जवाब दें, अगर उन्हें चुनाव में खालिस्तानी समर्थकों से मदद मिली है। केजरीवाल की आम आदमी पार्टी पंजाब में सत्तारूढ़ दल कांग्रेस के लिए एक प्रमुख चुनौती बनकर उभरी है। पंजाब में विधानसभा चुनाव के लिए रविवार को मतदान होना है।

बर्थडे की खुशियां पलभर में मातम में बदली, केक काटने के बाद पति-पत्नी में हुआ झगड़ा, सुबह पंखे से लटकी मिली लाश

एजेंसी । एक घर में बर्थडे की खुशियां उस समय मातम में बदल गई जब पत्नी का शव पंखे ले लटका पाया। दरअसल, नोएडा सेक्टर 119 में बर्थडे की खुशियां पलभर में ही मातम में बदल गईं। सेक्टर 119 में मौजूद एल्डिको आमंत्रण सोसायटी में एक में तल रही जन्मदिन की पार्टी में का केक काटते ही पति और पत्नी में झगड़ा हो गया और महिला ने पंखे से लटक कर खुदकुशी कर ली। पुलिस जानकारी के अनुसार, सोनम सिंह नाम की महिला अपने पति उत्तम कुमार के साथ रहती थी। मृतक महिला के पति एक बड़ी कंपनी में इंजीनियर है और दोनों को एक 10 साल का बेटा भी है। शुक्रवार को सोनम का जन्मदिन था लिहाजा गुरुवार की रात 12 बजे केक काटने का प्रोग्राम था, केक काटने के दौरान ही पत्नी का उत्तम के साथ किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद मामला शांत हुआ तो सोनम अपने कमरे में सोने चली गई लेकिन सुबह बाहर नहीं आई और पति ने आवाज लगाई लेकिन अंदर से कोई रिएक्शन न होने पर उत्तम ने किसी तरह से दरवाजा खुलवाया तो देखा कि उनकी पंखें से लटकी हुई है। वहीं पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज मामले की जांच में जुट गई है ।

आपराधिक कार्यवाही रद्द करने की शक्ति का इस्तेमाल सावधानी से किया जाना चाहिए: न्यायालय

एजेंसी । उच्चतम न्यायालय ने कहा कि आपराधिक कार्यवाही रद्द करने की शक्ति का इस्तेमाल बहुत समझदारी और सावधानी के साथ किया जाना चाहिए तथा वह भी दुर्लभ मामलों में। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति एस रवींद्र भट की पीठ ने एक संपत्ति विवाद में तीन लोगों के खिलाफ जालसाजी और धोखाधड़ी का मामला रद्द करते हुए ये टिप्पणियां कीं। पीठ ने कहा, ''अदालत आगाह करती है कि आपराधिक कार्यवाही को रद्द करने की शक्ति का इस्तेमाल बहुत समझदारी से और सावधानी के साथ किया जाना चाहिए तथा वह भी दुर्लभ से दुर्लभतम मामलों में। इसने (शीर्ष अदालत ने) मामलों की कुछ श्रेणियों को स्पष्ट किया है, जहां कार्यवाही रद्द करने की ऐसी शक्ति का इस्तेमाल किया जा सकता है। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि ऐसी एक श्रेणी जहां इस शक्ति का इस्तेमाल किया जा सकता है, वह ऐसी आपराधिक कार्यवाही से है, जो आरोपी से प्रतिशोध लेने और निजी तथा व्यक्तिगत द्वेष के मकसद से दुर्भावनापूर्ण रूप से शुरू की गयी हो। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि मजिस्ट्रेट आपराधिक दंड संहिता की धारा 156 (3) के तहत शीर्ष न्यायालय द्वारा तय कानून पर विचार करने में पूरी तरह नाकाम रहा है।जो आरोपी से प्रतिशोध लेने और निजी तथा व्यक्तिगत द्वेष के मकसद से दुर्भावनापूर्ण रूप से शुरू की गयी हो। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि मजिस्ट्रेट आपराधिक दंड संहिता की धारा 156 (3) के तहत शीर्ष न्यायालय द्वारा तय कानून पर विचार करने में पूरी तरह नाकाम रहा है।

फारूक अब्दुल्ला का भाजपा पर वार, कहा- गरीब हितैशी नहीं बल्कि गरीब विरोधी है

जम्मू । नेशनल कान्फ्रेंस (नेकां) अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने केंद्र की भाजपा नीत सरकार पर गरीब विरोधी और युवा विरोधी नीतियां आगे बढ़ाने का आरोप लगाते हुए निशाना साधा। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री ने दावा किया कि पिछले कुछ वर्षों में लोगों समस्याएं बढ़ गई हैं और सबसे अधिक दिक्कतों का सामना बढ़ती बेरोजगारी दर के चलते समाज के शिक्षित, बेरोजगार वर्ग को करना पड़ रहा है। नेशनल कांफ्रेंस छात्र संघ के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत करते हुए, अब्दुल्ला ने कहा कि अभ्यर्थियों के के लिए सीमित विकल्प उपलब्ध होने और भर्ती प्रक्रिया की धीमी गति के कारण बेरोजगारी कई गुना बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि नेशनल कांफ्रेंस (नेकां) हमेशा युवाओं के साथ खड़ी रही है और वह उनके जायज हितों के लिए संघर्ष करती रहेगी। वह उनके जायज हितों के लिए संघर्ष करती रहेगी। वह उनके जायज हितों के लिए संघर्ष करती रहेगी।

राजनीतिक पार्टियों का आरोप, भाजपा कार्यालय में तैयार हुई है परिसीमन आयोग की रिपोर्ट

जम्मू ।

जम्मू-कश्मीर के राजनीतिक दलों ने शुक्रवार को भाजपा पर आरोप लगाया कि परिसीमन आयोग की रिपोर्ट का मसौदा उसके दफ्तर में तैयार किया गया। विपक्षी दलों ने यह आरोप भाजपा की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष रवींद्र रैना और पूर्व मंत्री शक्ति परिहार के बीच हुई कथित बातचीत का ऑडियो सोशल मीडिया पर आने के बाद लगाया। भाजपा के विरोधी दलों ने एक ओर जहां आयोग के स्वतंत्र कामकाज पर संदेह जताया, तो दूसरी ओर भाजपा की जम्मू-कश्मीर इकाई के प्रमुख रैना ने इसे पार्टी के खिलाफ एक साजिश करार दिया और दावा किया कि ऑडियो गढ़ा हुआ और फजी है। जम्मू-कश्मीर कांग्रेस ने एक जांच की मांग करते हुए कहा कि लीक हुए ऑडियो ने उसके इस रुख की पुष्टि की है कि प्रशासन ने परिसीमन रिपोर्ट उनके (भाजपा पार्टी) कार्यालय में तैयार की है। जम्मू-कश्मीर कांग्रेस प्रमुख जी.ए मीर ने यहां पत्रकारों से कहा, यह देश के संवैधानिक और स्वायत्त स्वतंत्र संस्थानों की स्वायत्तता के खिलाफ है और उसके स्वतंत्र कामकाज पर आक्षेप के समान है। कांग्रेस ने मांग की कि परिसीमन आयोग को अपनी रिपोर्ट को सार्वजनिक करने से पहले उसकी विभिन्न मापदंडों को ध्यान में रखते हुए समीक्षा करनी चाहिए और उसे फिर से तैयार करना चाहिए। पीडीपी ने कहा कि ऑडियो इस आरोप को सही साबित करता है कि रिपोर्ट भाजपा नेताओं के निर्देश पर तैयार की गई । ऑडियो में रैना को कथित तौर प उनके डोडा निर्वाचन क्षेत्र में कुछ क्षेत्र को शामिल करने की ओर इशारा करते हुए सुना गया। परिसीमन आयोग की मसौदा रिपोर्ट को खारिज करते हुए, पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के महासचिव गुलाम नबी लोन हंजुरा ने आरोप लगाया कि आयोग ने भाजपा के विभाजनकारी एजेंडे का खुले तौर पर पालन किया है।

विभाजनकारी एजेंडे का खुले तौर पर पालन किया है। उन्होंने जम्मू में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, ऐसा प्रतीत होता है कि परिसीमन आयोग की रिपोर्ट त्रिकुटा नगर स्थित डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी भवन में तैयार की गई थी और उस पर आयोग के सदस्यों द्वारा केवल हस्ताक्षर किए गए थे।

दिल्ली में हवा की गुणवत्ता में आया सुधार, न्यूनतम तापमान 10.8 डिग्री सेल्सियस पर

एजेंसी । राष्ट्रीय राजधानी में शनिवार सुबह न्यूनतम तापमान 10.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस मौसम का औसत तापमान है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने यह जानकारी दी। आईएमडी ने बताया कि सुबह साढ़े आठ बजे सापेक्ष आर्द्रता 90 प्रतिशत दर्ज की गई। मौसम विभाग ने दिन के दौरान तेज हवाएं चलने का अनुमान जताया है और अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने बताया कि दिल्ली के वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में सुधार आया और वह सुबह नौ बजे 'मध्यम श्रेणी (186) में दर्ज किया गया। पड़ोसी फरीदाबाद में एक्यूआई (218), गाजियाबाद में (225), गुरुग्राम (200), नोएडा (169) और ग्रेटर नोएडा (167) में भी एक्यूआई खराब श्रेणी में दर्ज किया गया। उल्लेखनीय है कि शून्य से 50 के बीच एक्यूआई को 'अच्छा, 51 और 100 के बीच 'संतोषजनक, 101 और 200 के बीच 'मध्यम, 201 और 300 के बीच 'खराब, 301 और 400 के बीच'बहुत खराब और 401 और 500 के बीच एक्यूआई को 'गंभीर माना जाता है। 'बहुत खराब और 401 और 500 के बीच एक्यूआई को 'गंभीर माना जाता है। राष्ट्रीय राजधानी में शुक्रवार को अधिकतम तापमान 28.4 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 9.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।न्यूनतम तापमान 9.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।

राज्य को अपनी खुद की गलती का फायदा उठाने की अनुमति नहीं दी ज सकती है: उच्चतम न्यायालय

एजेंसी । उच्चतम न्यायालय ने गुजरात उच्च न्यायालय के उस आदेश को बरकरार रखा है जिसमें राज्य सरकार को 30 साल से अधिक की सेवा के बाद सेवानिवृत्त होने वाले व्यक्ति को पेंशन संबंधी लाभों का भुगतान करने का निर्देश दिया गया था। न्यायमूर्ति एम. आर. शाह और न्यायमूर्ति बी. वी. नागरत्ना की पीठ ने कहा कि राज्य को अपनी खुद की गलती का फायदा उठाने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। पीठ ने कहा, ''तीस वर्षों तक लगातार सेवाएं लेना और उसके बाद यह दलील देना कि कोई कर्मचारी जिसने 30 वर्षों तक निरंतर सेवा की है, पेंशन के लिए पात्र नहीं होगा, अनुचित रुख के अलावा और कुछ नहीं है। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि एक कल्याणकारी राज्य के रूप में, राज्य को ऐसा रुख नहीं अपनाना चाहिए था। पीठ ने कहा, ''वर्तमान मामले में, उच्च न्यायालय ने राज्य को प्रतिवादी को पेंशन लाभ का भुगतान करने का निर्देश देने में कोई त्रुटि नहीं की है उच्च न्यायालय ने राज्य को प्रतिवादी को पेंशन लाभ का भुगतान करने का निर्देश देने में कोई त्रुटि नहीं की है, जो 30 साल से अधिक सेवा प्रदान करने के बाद सेवानिवृत्त हुआ है।

अरुणाचल में कोरोना संक्रमण से एक और व्यक्ति की हुई मौत, अब तक मरने वालों की संख्या बढ़कर 296 पर पहुंची

एजेंसी ।

अरुणाचल प्रदेश में कोरोना संक्रमण से एक और व्यक्ति की मौत होने से इस महामारी से मरने वालों की संख्या बढ़कर 296 हो गयी है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। इसी बीच, उत्तर-पूर्व राज्य में संक्रमण से लोग तेजी से स्वस्थ हो रहे हैं। यहां पिछले चौबीस घंटे में संक्रमण के 44 नए मामले सामने आये जबकि 53 लोग स्वस्थ हुए हैं। राज्य में कोरोना संक्रमण की संख्या बढ़कर 64,244 हो गयी है तथा संक्रमण से स्वस्थ होनों वालों की संख्या बढ़कर 63,597 हो गयी है जबकि राज्य में सक्रिय मामलों की संख्या 351 है। कोरोना संक्रमण के नये मामलों में 14 मामले तवांग से आये हैं जबकि नामसाई तथा पश्चिमी कमेंग से पांच-पांच, लोंगडिंग से चार तथा ईटानगर राजधानी कॉम्प्लेक्स और ऊपरी सियांग से तीन-तीन मामले सामने आये हैं। संक्रमण के नए मामलों में 23 मामले बिना लक्षण के हैं तथा 21 मामले लक्षणों वाले हैं। राज्य में पिछले चौबीस घंटे में 783

नमूनों की जांच होने से कुल जांच किये गए नमूनों की संख्या बढ़कर 12,58,774 हो गयी है। शनिवार को पॉजिटिविटी दर 5.6 प्रतिशत रही। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने बताया कि राज्य में कोरोना संक्रमणमुक्त दर 98.99 प्रतिशत है, पॉजिटिविटी दर 0.55 प्रतिशत तथा मृत्यु दर 0.46 प्रतिशत है।

नौ बड़े शहरों में ईवी चार्जिंग स्टेशनों की संख्या ढाई गुना बढ़ी

एजेंसी ।

देश के नौ बड़े शहरों में इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) के चार्जिंग स्टेशनों की संख्या पिछले चार महीनों में ही ढाई गुना तक बढ़ चुकी है। ऊर्जा मंत्रालय ने शनिवार को एक बयान में कहा कि दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता समेत नौ प्रमुख शहरों में ईवी चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बीते चार महीनों में तेजी से बढ़ी है। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की सरकारी नीति के तहत बड़े शहरों में ईवी चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बढ़ाने की कोशिश जारी है। इस बयान के मुताबिक, अक्टूबर 2021 से लेकर जनवरी 2022 के बीच इन नौ शहरों में 678 अतिरिक्त चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए गए हैं। इस तरह इन शहरों में मौजूद सार्वजनिक ईवी स्टेशनों की संख्या बढ़कर 940 हो गई है। देश भर में अब इनकी संख्या करीब 1,640 हो चुकी है। सरकार ने शुरुआती दौर में 40 लाख से अधिक आबादी वाले बड़े शहरों में इलेक्ट्रिक वाहनों पर प्रोत्साहन देने की नीति अपनाई हुई है। इसी क्रम में बड़े शहरों में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए ढांचागत आधार तैयार करने के लिए चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बढ़ाई जा रही है। ऊर्जा मंत्रालय ने गत 14 जनवरी को ईवी चार्जिंग स्टेशनों की सरकार ने ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के प्रयास में बीईई, ईईएसएस, पीजीसीआईएल और एनटीपीसी जैसी सार्वजनिक इकाइयों के अलावा निजी कंपनियों को भी अपने साथ जोड़ा है।

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में नियंत्रण रेखा के पास बारूदी सुरंग विस्फोट में लड़की घायल

जम्मू ।

जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास बारूदी सुरंग में विस्फोट होने से 12 साल की एक बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने कहा कि जमीला बी नामक एक बालिका जब शुक्रवार की शाम अपनी बकरियों को चराने के बाद घर लौट रही थी, तभी शाहपुर सेक्टर में सोकुद-बग्याल धारा गांव के पास गलती से एक बारूदी सुरंग पर उसने कदम रख दिया। अधिकारियों के मुताबिक बारूदी सुरंग के विस्फोट में वह गंभीर रूप से घायल हो गई और उसे तुरंत पास के सैन्य अस्पताल में ले जाया गया। उसे वहां प्राथमिक उपचार दिया गया

और बाद में विशेष उपचार के लिए पुंछ जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। गौरतलब है कि सीमा पार से घुसपैठ को रोकने के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों में बारूदी सुरंगें बिछाई जाती हैं जो कभी-कभी बारिश से बह जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी दुर्घटनाएं होती हैं।

शशि थरूर ने किया भारत विरोधी पोस्ट को किया रीट्वीट! कुवैत भारतीय दूतावास ने उठाए सवाल

नई दिल्ली।

कुवैत स्थित भारतीय दूतावास ने भारत विरोधी ट्वीट को रीट्वीट करने को लेकर शुक्रवार को कांग्रेस सांसद शशि थरूर की आलोचना की। दूतावास ने उक्त ट्वीट को एक पाकिस्तानी एजेंट का ट्वीट बताया और कहा कि इस तरह के भारत विरोधी तत्वों को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। भारतीय दूतावास की कड़ी प्रतिक्रिया थरूर के उस ट्वीट को रीट्वीट करने पर आई जिसमें दावा किया गया था कि कुछ शक्तिशाली कुवैती सांसदों के एक समूह ने कुवैत की सरकार से भारत की सत्तारूढ़ भाजपा के किसी भी सदस्य के कुवैत में प्रवेश पर तत्काल रोक लगाने की मांग की है। ट्वीट में आगे कहा गया है, ''सांसदों ने कहा कि हम चुपचाप बैठकर मुस्लिम लड़कियों पर होते अत्याचार को नहीं देख सकते हैं। ये उम्मा के एकजुट होने का समय है। थरूर ने इस ट्वीट का हवाला देते हुए ट्विटर पर लिखा, ' घरेलू घटनाओं के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव होते हैं। मैंने खाड़ी के अपने दोस्तों से भारत में 'इस्लामोफोबिया के बढ़ने को लेकर निराशा और इसकी निंदा करने के लिए प्रधानमंत्री की अनिच्छा के बारे में सुना है। इसको लेकर थरूर पर निशाना साधते हुए कुवैत स्थित भारतीय दूतावास ने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर कहा, '' यह देखकर दुख हुआ कि भारतीय संसद के एक माननीय सदस्य पाकिस्तानी एजेंट के भारत-विरोधी ट्वीट को रीट्वीट कर रहे हैं, जिसे उसकी भारत विरोधी गतिविधियों के लिए पाकिस्तान का शांति का दूत पुरस्कार मिला था। इस तरह के भारत विरोधी तत्वों को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने भारतीय दूतावास के इस ट्वीट को रीट्वीट किया। इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए थरूर ने कहा कि वे ऐसे किसी व्यक्ति का समर्थन नहीं करते जिसके बारे में उन्होंने कभी नहीं सुना हों लेकिन वह ऐसी भावना को लेकर चिंतित हैं ''जिसे भारत में कई मित्र साझा करते हैं। उन्होंने कहा कि कुवैत में भारतीय दूतावास के विचार को स्वीकार करते हुए वह भारत सरकार से आग्रह करते हैं कि ऐसे भारत विरोधी तत्वों को कोई मौका नहीं दें। उन्होंने कहा कि कुवैत में भारतीय दूतावास के विचार को स्वीकार करते हुए वह भारत सरकार से आग्रह करते हैं कि ऐसे भारत विरोधी तत्वों को कोई मौका नहीं दें।

कर्नाटक: हिज़ाब को लेकर प्रदर्शन के दौरान 10 लड़कियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज़

कर्नाटक। कर्नाटक में हिजाब विवाद अब एक राष्ट्रीय मुद्दा बनता जनता जा रहा है। वहीं अब इस बीच 17 फरवरी को तुमकुर में गर्ल्स एम्प्रेस गवर्नमेंट पीयू कॉलेज के बाहर हिज़ाब को लेकर प्रदर्शन के दौरान सीआरपीसी की धारा 144 के तहत जारी निषेधाज्ञा का उल्लंघन करने के आरोप में कम से कम 10 लड़कियों के खिलाफ आईपीसी की धारा 149, 143, 145 और 188 के तहत एफआईआर दर्ज़ की गई है। वहीं इससे पहले शुक्रवार को शिवमोग्गा जिले में हिजाब पर प्रतिबंध के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने के बाद कर्नाटक के एक स्कूल के 58 छात्राओं को निलंबित कर दिया गया है। छात्राओं की मांग थी कि कक्षा के अंदर हिजाब पहनने की अनुमति दी जाए। उन्होंने कहा कि हिजाब हमारा अधिकार है, हम मर जाएंगे लेकिन हिजाब नहीं छोड़ेंगे। इस बीच, अन्य प्रदर्शनकारियों पर भी निषेधाज्ञा का उल्लंघन करने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। वहीं गुरुवार को शिवमोग्गा जिला प्राधिकरण द्वारा जारी निषेधाज्ञा का उल्लंघन करने पर 9 लोगों के खिलाफ सीआरपीसी की धारा 144 के तहत मामला दर्ज किया गया था। मुस्लिम लड़कियों ने कैंपस में बुर्का नहीं पहनने देने के लिए जिला मुख्यालय मुस्लिम लड़कियों ने कैंपस में बुर्का नहीं पहनने देने के लिए जिला मुख्यालय कस्बे में पीयू कॉलेज के अधिकारियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया था।

कनाडा के ओटावा में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करना शुरू किया

ओटावा।

कनाडा की राजधानी ओटावा में पुलिस ने तीन सप्ताह से मुख्य सड़कों पर चल रहे जाम को हटाने की कोशिश के तहत शुक्रवार को प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करना शुरू किया। सैकड़ों ट्रक चालकों ने कोविड-19 पाबंदियों के विरूद्ध शहर का घेराव कर रखा है। पुलिस के अनुसार अधिकारी कतार में खड़े ट्रकों के बीच एक-एक ट्रक के पास जा रहे थे। कुछ प्रदर्शनकारियों ने आत्मसमर्पण किया, जबकि कुछ को हिरासत में लिया गया। कुछ को हथकड़ी लगाकर ले जाया गया। अनेक ट्रकवाले अपनी बातों पर अड़े हैं। ट्रक चालक केविन होमौंड ने कहा, '' आजादी कभी मुफ्त नहीं रहीं। ऐसे में यदि वे हमें हथकड़ी पहना देते हैं या जेल में डाल देते हैं तो क्या? पुलिस ने दो अहम प्रदर्शनकारियों को तमारा लिच और क्रिस बार्बर को गिरफ्तार कर बृहस्पतिवार रात को इस घेराव को हटाने की पहली कोशिश की थी। उसने शहर के ज्यादातर हिस्से को सील भी कर दिया है, ताकि बाहर से कोई उनकी मदद नहीं करने पहुंचे। तीन हफ्ते के प्रदर्शन के बाद राजधानी इस आंदोलन की अंतिम गढ़ है। इससे पहले ऐसे ही प्रदर्शन से अमेरिका और कनाडा के बीच रास्ता जाम होने से दोनों देशों को बड़ा आर्थिक नुकसान हुआ और प्रधानमंत्री जस्टन ट्रूडो के लिए राजनीतिक संकट खड़ा हो गया। ट्रूडो ने सोमवार को आपात कानून लगा दिया। दरअसल, कनाडा में इन दिनों कोविड-19 टीकाकरण और वैश्विक महामारी संबंधी पाबंदियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। ट्रक चालकों की अगुवाई में प्रदर्शनकारियों ने कनाडा की राजधानी ओटावा में ट्रकों के साथ जाम लगा दिया है और कई जगह कनाडा से अमेरिका जाने वाला मार्ग बाधित कर दिया है। बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी ओटावा के पार्लियामेंट हिल इलाके में पहुंचे और उन्होंने सरकारी इमारतों के चारों ओर कटीले तार लगाकर उनकी घेराबंदी कर दी।

रूस ने आने वाले वक्त में यूक्रेन पर आक्रमण करने का निर्णय लिया है : बाइडन

वाशिंगटन।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने शुक्रवार को कहा कि उन्हें यकीन है और उनके पास यह मानने की वजह है कि रूसी बल आने वाले हफ्ते में राजधानी कीव समेत यूक्रेन पर हमला करेंगे। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि अगर रूस हमला करता है तो वह ''विध्वंसकारी और अनावश्यक युद्ध'' का जिम्मेदार होगा। बाइडन ने रूस और अमेरिका में बढ़ते तनाव के बीच यह टिप्पणियां की है। अमेरिका ने आशंका जतायी है कि रूस की यूक्रेन पर हमला करने की योजना है। रूस ने बार-बार इससे इनकार किया है। व्हाइट हाउस से पत्रकारों से बातचीत में बाइडन ने शुक्रवार को कहा कि अमेरिका हर उस वजह को खत्म करने की हरसंभव कोशिश कर रहा है जिसे रूस यूक्रेन पर हमला करने की आड़ बना सकता है तथा वह उसे आगे बढ़ने से रोकने की भी कोशिश कर रहा है। बाइडन ने कहा, ''देखिए, हमे यकीन है कि रूसी बल आने वाले सप्ताह या आने वाले दिनों में यूक्रेन पर हमला करने की योजना बना रहे हैं। हमें यकीन है कि वे यूक्रेन की राजधानी कीव को निशाना बनाएंगे जहां, 28 लाख निर्दोष लोग रहते हैं।'' उन्होंने कहा, ''कोई गलती न करें। अगर रूस अपनी योजना को आगे बढ़ाता है तो वह विध्वंसकारी और अनावश्यक युद्ध का जिम्मेदार होगा। अमेरिका और हमारे सहयोगी देश नाटो क्षेत्र की एक-एक इंच जमीन की रक्षा करने के लिए तैयार हैं।'' अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि उन्हें यकीन है कि रूस यूक्रेन पर हमला करने जा रहा है।

उन्होंने यूक्रेन में सैनिकों को भेजने की संभावना से इनकार किया लेकिन कहा कि अमेरिका, यूक्रेन के लोगों का सहयोग जारी रखेगा। यह पूछने पर कि क्या उन्हें लगता है कि आक्रमण की स्थिति में यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेन्स्की का यूक्रेन छोड़ना बुद्धिमानी वाला कदम होगा, इस पर बाइडन ने कहा, ''इसका फैसला उन्हें करना है। मैंने जेलेन्स्की से कई दफा बात की है।''

शरीफ को विदेश जाने की अनुमति देना सबसे बड़ी गलती थी : इमरान

लाहौर।

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान ने शुक्रवार को स्वीकार किया कि पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को इलाज के लिए विदेश जाने की अनुमति देना पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ सरकार की सबसे बड़ी गलती थी। शरीफ (72) फिलहाल लंदन में हैं जहां नवंबर 2019 से उनका इलाज चल रहा है। खबरों के अनुसार प्रमुख विपक्षी दल पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) सुप्रीमो शरीफ को कई बीमारियों के अलावा हृदय संबंधी समस्याएं भी हैं। इमरान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मंडी बहाउद्दीन में एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने शरीफ को विदेश जाने की अनुमति देने से पहले उनके स्वास्थ्य की स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि उनकी सरकार को लगा कि वह एक दिन भी जीवित नहीं रह पाएंगे। इमरान ने कहा, मैं आज स्वीकार करता हूं कि हमने उन्हें (नवाज) को विदेश जाने की अनुमति देकर सबसे बड़ी गलती की।

इमरान की यह रैली विपक्ष का मुकाबला करने के प्रयास के तहत आयोजित की गई थी। विपक्ष उनके खिलाफ संसद में अविश्वास प्रस्ताव लाने और उन्हें सत्ता से हटाने की जोरदार कोशिश कर रहा है। इमरान ने अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी पर ऐसे समय हमला बोला है । लोकप्रियता देश के कई क्षेत्रों में कम हुयी है।

नेपाल को अमेरिकी अनुदान: चीन ने कहा, संप्रभुता की कीमत पर सहायता के खिलाफ है

बीजिंग ।

अमेरिका की ओर से नेपाल को 50 करोड़ डालर के मिलेनियम कॉरपोरेशन चैलेंज (एमसीसी) कार्यक्रम से चौकन्ने चीन ने शुक्रवार को कहा कि वह ''जबरदस्ती की कूटनीति'' और संप्रभुता की कीमत पर सहायता के खिलाफ है। इस बीच अमेरिका-वित्त पोषित मिलेनियम चैलेंज कॉरपोरेशन (एमसीसी) समझौते का समर्थन करने के लिए नेपाल के सत्तारूढ़ गठबंधन की बैठक शुक्रवार को दूसरे दिन बेनतीजा रही। नेपाल के राजनीतिक दलों में इसे लेकर मतभेद के बीच कि अमेरिकी बुनियादी ढांचा सहायता कार्यक्रम को स्वीकार करना चाहिए या नहीं, चीन काठमांडू में जारी राजनीतिक बहस में कूद गया है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा कि बीजिंग नेपाल को अंतरराष्ट्रीय सहायता देखकर ''प्रसन्न'' है, लेकिन यह सहायता बिना किसी राजनीतिक बंधन के होनी चाहिए। वांग ने कहा, इस तरह का सहयोग नेपाली लोगों की इच्छा के पूर्ण सम्मान पर आधारित होना चाहिए और इसमें कोई राजनीतिक बंधन नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा, ''हम जबरदस्ती की कूटनीति और दूसरे देशों की संप्रभुता की कीमत पर स्वार्थी हितों पर आधारित एजेंडे का विरोध करते हैं।' उन्होंने कहा, नेपाल के मित्र एवं करीबी पड़ोसी और विकास भागीदार के रूप में, चीन हमेशा की तरह, नेपाली लोगों को स्वतंत्र रूप से अपना विकास पथ चुनने में समर्थन करेगा। साथ ही नेपाल को उसके राष्ट्रीय हितों और लोगों की इच्छा को ध्यान में रखते हुए सही विकल्प चुनने में समर्थन करेगा। पिछले हफ्ते, अमेरिका ने नेपाल से कहा था कि वह एमसीसी के तहत अमेरिका से प्रस्तावित अनुदान सहायता की 28 फरवरी तक पुष्टि करे। उसने यह चेतावनी दी थी कि अगर काठमांडू ने कार्यक्रम को स्वीकार नहीं किया, तो वाशिंगटन हिमालयी राष्ट्र के साथ अपने संबंधों की समीक्षा करेगा ।

अमेरिकी न्यायाधीश ने ट्रंप के छह जनवरी संबंधी मुकदमों को रद्द करने के प्रयास खारिज किए

वाशिंगटन । अमेरिका के एक संघीय न्यायाधीश ने पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ सांसदों तथा संसद भवन के दो पुलिस अधिकारियों द्वारा साजिश के आरोप में दर्ज कराए गए मुकदमों को रद्द करने का उनका प्रयास खारिज कर दिया। न्यायाधीश ने कहा कि संभवतः पूर्व राष्ट्रपति के शब्दों ने ''विश्वसनीय रूप से'' छह जनवरी 2021 को हुए विद्रोह का मार्ग प्रशस्त किया। यूएस डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के न्यायाधीश अमित मेहता ने अपने फैसले में कहा कि अमेरिकी संसद भवन में हिंसक भीड़ के घुसने से पहले एक रैली के दौरान कहे गए ट्रंप के शब्द उकसावे के शब्दों जैसे थे। न्यायाधीश मेहता ने कहा कि ट्रंप के भाषण से लोग कानून तोड़ सकते थे। हालांकि, उन्होंने ट्रंप के बेटे डोनाल्ड ट्रंप जूनियर और वकील रुडी गुइलियानी के खिलाफ ऐसे ही आरोप खारिज कर दिए। कि ट्रंप, ट्रंप जूनियर, गुइलियानी और रिपब्लिकन सांसद मो ब्रूक्स ने ''फर्जीवाड़े और चोरी के झूठे और उकसावे वाले आरोप लगाए और रैली में हिंसा के आह्वान पर एक हिंसक भीड़ ने अमेरिकी संसद भवन पर हमला किया।''

लग्जरी कारों को अमेरिका ले जा रहे जहाज में लगी भयानक आग, ऑडी और लेम्बोर्गिनी जैसी सैकड़ों कारें पानी में बहीं

इंटरनेशनल डेस्क।

कोरोना महामारी के कारण पहले ही कई उद्योग नुकसान झेल रहे हैं। ऐसे में ऑटो उद्योग की कमर तोड़ने वाली एक और घटना सामने आई है। दरअसल फॉक्सवैगन ग्रुप की हजारों लग्जरी कारों से भरा एक मालवाहक जहाज अटलांटिक महासागर में बह गया है। हालांकि जहाज के चालक दल को बचा लिया गया है। हालांकि जहाज में आग लगने के कारण फॉक्सवैगन ग्रुप को खासा नुकसान हुआ है।

नौसेना ने बचाई 22 लोगों की जान

मालवाहक जहाज अटलांटिक महासागर के रास्ते फॉक्सवैगन ग्रुप के कई हजार नए वाहनों को जर्मनी से अमेरिका ले जा रहा था। पनामा के फ्लैग वाले फेलिसिटी एस नाम के मालवाहक जहाज में इस हफ्ते अचानक आग लग गई थी। पुर्तगाली नौसेना और वायुसेना द्वारा जहाज के 22 चालक दल के सदस्यों को निकाला गया और एक स्थानीय होटल में ले जाया गया। जहाज को ही मानव रहित और बहते हुए छोड़ दिया गया था। जहाज गाड़ियों के साथ अटलांटिक महासागर में बह गया। जानकारी के मुताबिक मालवाहक जहाज में 3900 से अधिक लग्जरी गाड़ियां थी जिन्हें जर्मनी से नॉर्थ अमेरिका लेकर जाया जा रहा था। फॉक्सवैगन ग्रुप के स्पोक्सपर्सन ने जहाज में जलने वाली गाड़ियों के ब्रांड की जानकारी नहीं दी है लेकिन अमेरिका में ये ग्रुप पोर्श, ऑडी, लेम्बोर्गिनी, बेंटले, और बुगाटी जैसी गाड़ियों को बेचता है। ऐसे में अंदेशा यह भी है कि फॉक्सवैगन ग्रुप को इस हादसे से बड़ा नुकसान हुआ है।

रूसी बल यूक्रेन की राजधानी कीव को निशाना बनाएंगे जहां, 28 लाख निर्दोष लोग रहते हैं: बाइडन

वाशिंगटन।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि उन्हें यकीन है और उनके पास यह मानने की वजह है कि रूसी बल आने वाले हफ्ते में राजधानी कीव समेत यूक्रेन पर हमला करेंगे। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि अगर रूस हमला करता है तो वह ''विध्वंसकारी और अनावश्यक युद्ध'' का जिम्मेदार होगा। बाइडन ने रूस और अमेरिका में बढ़ते तनाव के बीच यह टिप्पणियां की है। अमेरिका ने आशंका जतायी है कि रूस की यूक्रेन पर हमला करने की योजना है। रूस ने बार-बार इससे इनकार किया है। व्हाइट हाउस से पत्रकारों से बातचीत में बाइडन ने शुक्रवार को कहा कि अमेरिका हर उस वजह को खत्म करने की हरसंभव कोशिश कर रहा है जिसे रूस यूक्रेन पर हमला करने की आड़ बना सकता है तथा वह उसे आगे बढ़ने से रोकने की भी कोशिश कर रहा है। बाइडन ने कहा कि देखिए, हमे यकीन है कि रूसी बल आने वाले सप्ताह या आने वाले दिनों में यूक्रेन पर हमला करने की योजना बना रहे हैं। हमें यकीन है कि वे यूक्रेन की राजधानी कीव को निशाना बनाएंगे जहां, 28 लाख निर्दोष लोग रहते हैं। उन्होंने कहा कि कोई गलती न करें। अगर रूस अपनी योजना को आगे बढ़ाता है तो वह विध्वंसकारी और अनावश्यक युद्ध का जिम्मेदार होगा। अमेरिका और हमारे सहयोगी देश नाटो क्षेत्र की एक-एक इंच जमीन की रक्षा करने के लिए तैयार हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि उन्हें यकीन है कि रूस यूक्रेन पर हमला करने जा रहा है। उन्होंने यूक्रेन में सैनिकों को भेजने की संभावना से इनकार किया लेकिन कहा कि अमेरिका, यूक्रेन के लोगों का सहयोग जारी रखेगा। यह पूछने पर कि क्या उन्हें लगता है कि आक्रमण की स्थिति में यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेन्स्की का यूक्रेन छोड़ना बुद्धिमानी वाला कदम होगा, इस पर बाइडन ने कहा कि इसका फैसला उन्हें करना है। मैंने जेलेन्स्की से कई दफा बात की है।'' उन्होंने कहा कि हम रूस को उसके कदमों के लिए जवाबदेह ठहराएंगे। पश्चिम देश एकजुट और दृढ़ संकल्पित हैं। अगर रूस यूक्रेन पर हमला करता है तो हम उस पर गंभीर प्रतिबंध लगाने के लिए तैयार हैं। लेकिन मैं फिर कहता हूं कि रूस अब भी कूटनीति का रास्ता चुन सकता है। तनाव कम करने में अभी देर नहीं हुई है।

बाइडन ने कहा कि अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव 24 फरवरी को मुलाकात करने पर राजी हुए हैं। उन्होंने कहा कि अगर रूस उस तारीख से पहले सैन्य कार्रवाई करता है तो यह स्पष्ट है कि उन्होंने कूटनीति के लिए दरवाजा बंद कर दिया है। उन्होंने कहा कि वे युद्ध को चुनेंगे और उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

आसमान से गिरा पक्षियों का झुंड और गिरते ही हो गई मौत, लाखों बार देखा गया ये रहस्यमय वीडियो

इंटरनेशनल डेस्क। सोशल मीडिया पर इनदिनों हैरान कर देने वाला वीडिया तेजी से वायरल हो रहा है जिसमें पक्षियों का एक झुंड रहस्यमय तरीके से आसमान से अचानक गिरा और साथ ही उसकी मौत हो गई। यह मामला मेक्सिको का बताया जा रहा है। एक सुरक्षा कैमरे के फुटेज में पक्षियों के झुंड को बड़े पैमाने पर काले भंवर में घरों पर उतरते हुए दिखाया गया है। जबकि कुछ ब्लैकबर्ड उड़ने में कामयाब रहे और कई मर गए। वीडियो में पक्षियों को सड़कों पर बेजान पड़े हुए दिखाया गया है। स्थानीय समाचार आउटलेट एल हेराल्डो डी चिहुआहुआ के अनुसार, मेक्सिको में चिहुआहुआ के निवासियों ने फुटपाथ पर मरे हुए पक्षी मिलने पर पुलिस को सूचना दी। अल्वारो ओब्रेगॉन की अनुभागीय पुलिस ने बताया, कि उन्हें 7 फरवरी सोमवार सुबह करीब 8॰20 बजे मृत पक्षियों के बारे में फोन आने लगे । पक्षियों के मरने वाला यह वीडियो ट्विटर पर शेयर किया है। स्थानीय अधिकारी तुरंत यह नहीं बता सके कि पक्षी रहस्यमय तरीके से आसमान से क्यों गिरे - लेकिन वायरल वीडियो ने कई सिद्धांतों को जन्म दिया। सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने यह भी अनुमान लगाया कि रहस्यमय मौतों के पीछे 5त्र कारण हो सकता है। सोशल मीडिया पर इस वीडियो को 1.4 मिलियन से ज्यादा बार देखा जा चुका है।

पुतिन ने आने वाले वक्त में यक्रेन पर आक्रमण करने का निर्णय लिया: बाइडन

इंटरनेशनल डेस्क।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने शुक्रवार को कहा कि उन्हें 'यकीन है कि रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन ने आने वाले वक्त में यूक्रेन पर आक्रमण करने का निर्णय लिया है। बाइडन ने कहा कि उनके पास 'यह मानने के कारण हैं कि 'आने वाले दिनो में ऐसा होगा और राजधानी कीव पर भी हमले होंगे। शुक्रवार को संघर्षरत क्षेत्र में एक काफिले पर गोलीबारी हुई और रूस समर्थित विद्रोहियों ने नागरिकों को वहां से निकाला। यूक्रेन के पूर्वी दोनेत्स्क शहर में एक कार पर बमबारी हुई लेकिन किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। इससे पहले अमेरिका लगातार यह कह रहा था कि वह पुख्ता तौर पर नहीं कह सकता कि पुतिन ने बड़े पैमाने पर आक्रमण करने का अंतिम निर्णय ले लिया है। बाइडन ने कहा कि आकलन बदला है। उन्होंने इस आकलन के लिए अमेरिका की 'अहम खुफिया क्षमता का जिक्र किया और कहा, '' इस क्षण मुझे यकीन है कि उन्होंने निर्णय ले लिया है। हमारे पास यह मानने का कारण है। उन्होंने दोहराया कि ''आने वाले दिनों में हमला हो सकता है। इस बीच, क्रेमलिन ने सैन्य ताकत को बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर परमाणु अभ्यास करने की घोषणा की और पुतिन ने पश्चिमी देशों के बढ़ते खतरों के खिलाफ रूस के राष्ट्रीय हितों की रक्षा का संकल्प लिया। बाइडन ने हमले की सूरत में रूस पर कड़े आर्थिक तथा राजनयिक प्रतिबंध लगाने की चेतावनी दोहराई और अपने निर्णय पर फिर से विचार करने को कहा। उन्होंने कहा कि अमेरिका और उसके पश्चिमी सहयोगी यह सुनिश्चित करने के लिए पहले से कहीं अधिक एकजुट हैं कि रूस को आक्रमण की कीमत चुकानी पड़ेगी। रूस के आक्रमण की तैयारी करने का संकेत देते हुए अमेरिका के एक रक्षा अधिकारी ने बताया कि यूक्रेन सीमा के आसपास तैनात तकरीबन 40 से 50 फीसदी जमीनी सैनिक सीमा के समीप आक्रमण चौकियों पर पहुंच गए हैं। अन्य अधिकारियों ने बताया कि यह कवायद करीब एक हफ्ते से चल रही है ।

संक्षिप्त समाचार

म्युनिख सुरक्षा सम्मेलन में अपने संबोधन में रूस को कड़ी चेतावनी दे सकती हैं कमला हैरिस

इंटरनेशनल डेस्क। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस शनिवार को म्युनिख सुरक्षा सम्मेलन में अपने बहुप्रतीक्षित भाषण में रूस को चेतावनी दे सकती हैं कि अगर उसने यक्रेन पर हमला किया तो उसे इसकी भारी आर्थिक कीमत चुकानी पड़ेगी। सम्मेलन में हैरिस के संबोधन से एक दिन पहले राष्ट्रपति जो बाइडन का बयान आया था कि उन्हें 'यकीन है कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन पर हमला करने का निर्णय ले लिया है। उपराष्ट्रपति का उद्देश्य यूरोपीय देशों को यह बताना है कि पश्चिमी देशों में एकता के माध्यम से शक्ति है। उनके संबोधन में इसका उल्लेख हो सकता है कि यूक्रेन पर हमले से नाटो की ओर से रूस पर बेहद कड़ी प्रतिक्रिया दी जा सकती है। म्युनिख में हैरिस के राजनयिक प्रयासों पर संवाददाताओं को जानकारी देने वाले एक अधिकारी ने नाम उजागर नहीं करने की शर्त पर यह जानकारी दी। हैरिस ने शुक्रवार को सम्मेलन से इतर एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया के नेताओं से हुई मुलाकात में कहा था कि एकता हमारी सबसे बड़ी ताकत है। बाल्टिक देशों ने अमेरिका से अनुरोध किया है कि वह नाटो के पूर्वी सदस्य देशों की तरफ अपने सैनिकों की तैनाती बढ़ाए। हैरिस ने कहा था, इस क्षण यह स्पष्ट है कि हमारी एकता ही हमारी ताकत है। यूरोपीय सहयोगियों के अलावा हैरिस पुतिन को यह संदेश दे सकती हैं कि वह युद्ध से दूर रहें वरना रूस पर बेहद कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं।

अमेरिकी सर्जन जनरल और उनका परिवार एहतियात बरतने के बावजूद कोविड-19 से संक्रमित

वाशिंगटन । अमेरिका के सर्जन जनरल विवेक मूर्ति ने शुक्रवार को बताया कि कोविड-19 रोधी टीके की खुराक लेने और अन्य एहतियात बरतने के बावजूद वह और उनका परिवार संक्रमित हो गया है। अमेरिकी डॉक्टर ने ट्वीट किया, ''जब आप जितना संभव हो, अपने आप को सुरक्षित रख रहे हों तो कोविड-19 से संक्रमित होना हताश करने वाला हो सकता है। मैंने यह महसूस किया। यह शर्मिंदगी की वजह हो सकती है। कई लोग मान लेते हैं कि आपने लापरवाही की होगी। हमारे सुरक्षा उपायों ने खतरे को कम किया है लेकिन वे खतरे को खत्म नहीं कर सकते।'' व्हाइट हाउस में कोविड कार्य बल के संवाददाता सम्मेलन में नियमित रूप से भाग लेने वाले मूर्ति ने कहा कि उन्हें और उनकी पत्नी, डॉक्टर एवं राजनीतिक कार्यकर्ता डॉ. एलिस चेन को हल्के लक्षण हैं। उन्हें सिर में दर्द और थकान हैं,वहीं मूर्ति को हड्डियों में दर्द और गले में सूजन है। उन्होंने लिखा, ''शुक्र है कि हम सांस ठीक से ले पा रहे हैं।'' मूर्ति, उनकी पत्नी और पांच साल के बेटे ने टीके की खुराक और बूस्टर खुराक ले रखी है। उनकी चार साल की बेटी अभी टीके की खुराक लेने की पात्र नहीं है। मूर्ति ने बताया कि उनके बच्चे बीमारी से उबर रहे हैं।

व्हाइट हाउस ने रूस पर लगाए यूक्रेन पर साइबर हमले करने के आरोप

वाशिंगटन । व्हाइट हाउस ने हाल में यूक्रेन के रक्षा मंत्रालय और प्रमुख बैंक को निशाना बनाते हुए किए गए साइबर हमलों के लिए रूस को जिम्मेदार ठहराया है। व्हाइट हाउस की मुख्य साइबर अधिकारी एने नेऊबर्जर ने साइबर हमलों के लिए रूस को जिम्मेदार ठहराया है और इन खुलासों से रूस और यूक्रेन के बीच पहले से चल रहा तनाव और बढ़ गया है। साइबर अधिकारी ने कहा कि इस सप्ताह हुए हमले का ''असर सीमित'' था क्योंकि यूक्रेनी अधिकारियों ने जल्द ही स्थिति पर काबू पाते हुए नेटवर्क व्यवस्था बहाल कर ली थी,लेकिन इस बात की आशंका है कि वे अधिक विनाशकारी हमलों की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने इस लिए तत्परता के साथ इन हमलों के लिए रूस को जिम्मेदार ठहराया है क्योंकि इन बर्ताव को जल्द रोके जाने की जरूरत है।

नाइजीरिया : ईंधन टैंकर में विस्फोट, 17 लोगों की मौत

अबुजा। नाइजीरिया के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में शुक्रवार को ईंधन से भरे ट्रक की एक बस से टक्कर होने के कारण 17 लोगों की मौत हो गई। ओगुन में फेडरल रोड सेफ्टी कॉर्प्स के एक प्रवक्ता फ्लोरेंस ओकपे के अनुसार, लागोस-इबादान एक्सप्रेसवे से लगे दक्षिण-पश्चिमी राज्य ओगुन के एक शहर में टैंकर में आग लग गई। ओकपे ने घटना स्थल पर संवाददाताओं से कहा कि कुल 14 शव बुरी तरह जल गए हैं, हालांकि तीन अन्य की पहचान कर उन्हें पास के मुर्दाघर में ले जाया गया है। उन्होंने कहा, हमारे अनुसार यह दुर्घटना यातायात नियमों का उल्लंघन करने और खतरनाक ड्राइविंग के कारण हुई है, जिसके परिणामस्वरूप आमने-सामने की टक्कर हुई। यातायात पुलिस के प्रवक्ता ने कहा कि हालांकि बचाव अभियान समाप्त हो गया है, तुरंत घटनास्थल पर पहुंचने वाले बचाव दल इसमें शामिल हताहतों की कुल संख्या का पता नहीं लगा सके। नाइजीरिया में घातक सड़क दुर्घटनाएं अक्सर सामने आती हैं ।

सुविचार सही राह पर होने के बाद भी यदि आप वहां बैठे ही रहोगे तो कोई गाड़ी आपको कुचलकर चली जायेगी - विल रोजर्स

संपादकीय

आतंकियों को सजा

कई बार फैसला जब तक आता है, बहुत सी यादें धुंधली पड़ जाती हैं। शुक्रवार को विशेष अदालत ने जब अहमदाबाद में 2008 के बम धमाकों के दोषियों को सजा सुनाई, तो लोगों को यह याद दिलाना पड़ा कि उस दिन कितनी बड़ी तबाही गुजरात के उस शहर ने देखी थी। 26 जुलाई की शाम एक के बाद एक, 70 मिनट के भीतर शहर के अलग-अलग हिस्सों में 21 धमाके हुए थे, जिनमें 56 लोगों की जान चली गई थी और 200 से ज्यादा लोग घायल हुए थे। षड्यंत्र का पर्दाफाश करने में हालांकि सुरक्षा एजेंसियों ने ज्यादा वक्त नहीं लगाया और एक साल के भीतर ही मामले में मुकदमा दायर हो गया। शुरू में इसे लेकर विभिन्न लोगों पर तकरीबन 35 मामले दायर हुए थे और बाद में इन सभी मामलों को जोड़ दिया गया। कुल 78 लोगों को आरोपी बनाया गया और अब जब 13 साल की अदालती कार्यवाही के बाद फैसला आया है, तो इनमें से 38 लोगों को मृत्युदंड दिया गया और 11 लोगों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। यह भी बताया जा रहा है कि भारत के पूरे इतिहास में एक साथ इतने लोगों को मृत्युदंड की सजा कभी नहीं सुनाई गई। जितना जघन्य वह षड्यंत्र था, उसे देखते हुए इस फैसले पर ज्यादा हैरत नहीं होती। फैसले के तुरंत बाद अहमदाबाद से एक तस्वीर आई, जिसमें कुछ लोग अपने हाथ में प्लेकार्ड लिए हुए हैं। एक में कहा गया है, मानवता जीती और आतंकवाद हारा, दूसरे पर लिखा है- पीड़ित परिवारों को मिला न्याय। निस्संदेह, लोगों को न्याय मिला है। ऐसे फैसले व्यवस्था पर हमारी आस्था को भी बढ़ाते हैं। लेकिन इस बात को भी याद रखना होगा कि इस फैसले तक पहुंचने में 13 साल लगे। वह भी तब, जब मामला एक ऐसी विशेष अदालत में था, जिसे त्वरित न्याय के लिए बनाया गया था। और अब भी जो फैसला मिला है, वह अंतिम नहीं है। इसके खिलाफ अभी ऊपरी अदालतों में अपील होगी। जब तक अंतिम फैसला आएगा, और भी देर हो चुकी होगी। बेशक, अगर हम पुराने समय से तुलना करें, तो आतंकवाद के मामलों में अब फैसले अपेक्षाकृत जल्दी होने लगे हैं। इसके बावजूद जो समय लग रहा है, उसे लेकर संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता। 13 साल की यह अवधि सिर्फ आतंकवाद ही नहीं, किसी भी आम दीवानी या फौजदारी मामले के हिसाब से भी काफी लंबी है, और किसी तरह से स्वीकार करने लायक नहीं है। विशेष अदालतों के जरिये त्वरित न्याय की जो भी कोशिशें की गई हैं, उनके कुछ एक नतीजे भी देखने को मिले हैं। लेकिन दिक्कत यह है कि हमारी पूरी न्याय-प्रक्रिया इतनी धीमी है कि त्वरित अदालतें भी उसकी प्रवृत्तियों से बच नहीं पातीं। हालांकि, इस मामले में विभिन्न जेलों में बंद आरोपियों की वीडियो के जरिये पेशी का रास्ता अपनाया गया। बेशक, यह महामारी को देखते हुए किया गया था, लेकिन अगर ऐसा न होता, तो शायद वक्त और लगता। अच्छी बात यह भी रही कि अदालत ने अपने फैसले को सिर्फ सजा देने तक सीमित नहीं रखा। उसने विस्फोटों में मारे गए लोगों के परिजनों को एक लाख रुपये, गंभीर रूप से घायल लोगों को 50 हजार रुपये और बाकी घायलों को 25 हजार रुपये का मुआवजा देने का निर्णय भी सुनाया। अब जरूरत यही है कि इस फैसले से आगे सब कुछ त्वरित गति से हो।

आज के कार्टुन

चेतना

जग्गी वासुदेव/ चेतना का अर्थ यह नहीं है कि आप खुद के बारे में सचेत रहें। खुद के प्रति सचेत रहना एक बीमारी है, और अचेत होना मृत्यु। चेतन होने का मतलब यह है कि आप अपने मूल से जुड़े रहते हैं। आप जिसे चेतना कहते हैं, वह कोई कार्य, कोई विचार या गुण नहीं है- यह तो सृष्टि का आधार है। अगर हम कहते हैं कि आप की चेतना बढ़ गई है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि आप अपने जर्मन शेर्पड (कुत्ते) से ज्यादा सतर्क हो गए हैं। चेतना दिमाग की नहीं होती, लेकिन अगर चेतना जागृत है तो मन स्पष्ट हो जाता है। यह आपके मन और शरीर के माध्यम से, आपकी हर एक कोशिका से, शक्तिशाली रूप से अभिव्यक्त होती है। चेतना इसलिए नहीं होती, कि आप कुछ कर रहे हैं, ये बस इसलिए होती है कि आप ने इसे होने दिया है। आप का जीवन भी चल रहा है, लेकिन आप कुछ भी नहीं कर रहे। हम जिसे चेतना कहते हैं, वह आप के जीवन और अस्तित्व का आधार है। यह कोई ऐसी बात नहीं है जो आप किसी खास समय पर कर सकते हैं या किसी खास समय पर नहीं कर सकते। चेतना तो तब भी है, जब आप इस शरीर में है या बिना शरीर के हैं। प्रश्न सिर्फ यह है कि वह आप को उपलब्ध है या नहीं? आप हमेशा चेतना के लिए उपलब्ध होते हैं, आप उससे बच नहीं सकते, पर क्या वह आप को उपलब्ध है? चेतना हमेशा आप के जीवन में प्रभाव डालती है। प्रश्न यह है कि क्या आप की पहुंच चेतना तक है? आपके इस पहुंच से दूर रहने का कारण यह है कि अगर आप इस तक पहुंच बना लेते हैं तो 'आप' गायब हो जाएंगे, 'आप' का अस्तित्व नहीं रहेगा। आप के पास न गर्व रहेगा, न शर्म रहेगी, न दर्द न सुख। लेकिन आप वह सब कर सकेंगे जो आप करना चाहते हैं। देखिये, मैं वह सब कर रहा हूं जो मैं करना चाहता हूं, पर वास्तव में, मैं कुछ भी नहीं कर रहा! आप के पास जीवन में बड़ी सफलताएं नहीं होंगी और आप अपने अंदर, किसी दूसरे की अपेक्षा न बेहतर होंगे न बदतर। आप न ऊपर जाएंगे न नीचे, लेकिन आप वह सब कर सकेंगे जो आप चाहते हैं। आप अपने जीवन में हर अनुभव पा सकेंगे। अगर मैं चाहूं, मैं अपने आप को बहुत दुखी बना सकता हूं, या फिर अपने आप को अति आनंदित बना सकता हूं, लेकिन दोनों ही अवस्थाओं में मैं जानता हूं कि यह मेरी ही बनाई हुई हैं।

ईओएस-04: अंतरिक्ष में भारत की तीसरी आंख

योगेश कुमार गोयल

पिछले दिनों इसरो ने अंतरिक्ष में बड़ी छलांग लगाते हुए भारत के नवीनतम अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट 'ईओएस-04' को अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया और इस सफलता के साथ ही इसरो की सफलता के इतिहास में एक और सुनहरा अध्याय जुड़ गया। इसरो का इस साल का यह पहला मिशन था और इस मिशन की एक अन्य विशेष बात यह थी कि इसरो के नए चेयरमैन तथा अंतरिक्ष विभाग के सचिव एस. सोमनाथ द्वारा पदभार संभालने के बाद इसरो का यह पहला लांच था। इसरो के इस मिशन में गत 14 फरवरी को धरती की निगरानी करने वाले सैटेलाइट ईओएस-04 के साथ दो अन्य छोटे सैटेलाइट भी सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित कर दिए गए। साढ़े 25 घंटे के काउंटडाउन के बाद पोलर सैटेलाइट लांच व्हीकल पीएसएलवी-सी52 ने सुबह करीब 6 बजे तीनों सैटेलाइट के साथ उड़ान भरी और करीब 17 मिनट 34 सेकेंड की उड़ान के बाद तीनों सैटेलाइट को सन-सिंक्रोनस पोलर ऑर्बिट में प्रविष्ट करा दिया, जो लक्षित ऑर्बिट के बहुत करीब है। पीएसएलवी के जरिये ईओएस-04 को पृथ्वी से 529 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थापित किया गया है। इसरो के मुताबिक ईओएस-04 सैटेलाइट अगले कुछ दिनों में आंकड़े उपलब्ध कराने लगेगा। श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र एसएचएआर से इसरो का यह 80वां लांच व्हीकल मिशन था तथा पीएसएलवी की 54वीं उड़ान थी जबकि एक्सएल कांफिगरेशन में 6 पीएसओएस-एक्सएल (स्ट्रैपऑन मोटर्स) के जरिये इस सिस्टम का प्रयोग करते हुए पीएसएलवी का यह 23वां अभियान था। अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित होने के बाद 1710 किलोग्राम वजनी ईओएस-04 अगले कुछ दिनों में आंकड़े उपलब्ध कराने लगेगा और आगामी 10 वर्षों तक कार्य करेगा। इसरो चेयरमैन एस. सोमनाथ के मुताबिक यह स्पेसक्राफ्ट देश की सेवा करने के लिए सबसे बड़ी परिसम्पत्तियों में से एक बनने जा रहा है। सैटेलाइट डायरेक्टर श्रीकांत का कहना है कि ईओएस-04 ने अंतरिक्ष क्षेत्र को उद्योग जगत की भागीदारी के लिए खोलने के देश के सपने को साकार करने की दिशा में छोटा कदम बढ़ाया है और इसरो अपने प्रयासों में सफल रही है। इससे पूर्व इसरो द्वारा नवम्बर 2020 में पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों की श्रृंखला का पहला उपग्रह ईओएस-01 सफलतापूर्वक लांच किया गया था। उसके बाद ईओएस-02 को मार्च-अप्रैल 2021 के आसपास लांच किया जाना था लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण उसे लांच किया जाना संभव नहीं हुआ। 12 अगस्त 2021 को इसरो द्वारा ईओएस-03 उपग्रह का प्रक्षेपण किया गया लेकिन इसरो का वह मिशन असफल रहा, जिससे इसरो को झटका लगा। जीएसएलवी-एफ10 के जरिये जब इसरो द्वारा धरती पर निगरानी रखने वाले उपग्रह ईओएस-03 का प्रक्षेपण शुरू किया गया था, तब पहले दो चरणों में वह सफलतापूर्वक आगे बढ़ा था लेकिन तीसरे चरण में इसके क्रायोजेनिक इंजन में खराबी आने के कारण इसरो को आंकड़े मिलने बंद हो गए, जिससे इसरो का महत्वाकांक्षी मिशन पूरा नहीं हो सका था। 2017 के बाद से किसी भारतीय अंतरिक्ष प्रक्षेपण में यह पहली विफलता थी। ईओएस-03 लांच की विफलता से पहले इसरो के लगातार 14 मिशन सफल रहे थे। ईओएस-03 को अंतरिक्ष से धरती की निगरानी करनी थी। जहां तक हाल ही में अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित किए गए पृथ्वी अवलोकन उपग्रह ईओएस-04 की बात है तो यह एक ऐसा अग्रिम रडार इमेजिंग उपग्रह है, जिसे अंतरिक्ष में भारत की सबसे तेज आंखें भी कहा जा रहा है। यह अर्थ ऑब्जर्वेशन रीसैट उपग्रह की ही एक एडवांस्ड सीरीज है। बेंगलुरु स्थित यूआर राव सेटेलाइट सेंटर में बनाया गया यह उपग्रह एक रडार इमेजिंग सैटेलाइट है, जिसका इस्तेमाल पृथ्वी की उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें लेने में किया जाएगा और इन तस्वीरों का उपयोग जलीय स्रोतों, फसलों, जंगलों तथा बड़ी परियोजनाओं की निगरानी में किया जा सकेगा। इस उपग्रह को हर तरह के मौसम में कृषि, वानिकी, पौधारोपण, मिट्टी में नमी, जल विज्ञान, बाढ़ मैपिंग जैसे कार्यों के लिए हाई रेजोल्यूशन तस्वीरें उपलब्ध कराने के लिए डिजाइन किया गया है। ईओएस-04 का सिंथैटिक अपरचर रडार बादलों के पार भी दिन-रात तथा हर प्रकार के मौसम में स्पष्टता के साथ देख सकता है और इसमें लगे कैमरों से बेहद स्पष्ट तस्वीरें खींची जा सकती हैं। इस सैटेलाइट की बेहद ताकतवर आंखों से सीमाओं पर दुश्मन की हर गतिविधि पर नजर रखना भी आसान हो जाएगा। भारत के दुश्मन पड़ोसी देशों चीन और पाकिस्तान की सीमा के आसपास की गतिविधियों पर नजर रखने में यह उपग्रह इन्हीं खूबियों के चलते भारतीय सेना के लिए भी मददगार साबित हो सकता है। इसकी मदद से सेना हर तरह के मौसम में दिन-रात दुश्मनों की गतिविधियों पर नजर रख सकेगी। यह उपग्रह धीरे-धीरे सूर्य की समकालिक ध्रुवीय कक्षा में स्थापित होगा। यह कृषि, वानिकी और आपदा प्रबंधन सहायता में प्रयोग किया जाने वाला पृथ्वी अवलोकन उपग्रह है, जो अंतरिक्ष में भारत की तीसरी आंख साबित होगा। इसरो द्वारा धरती की निगरानी करने वाले ईओएस-04 के साथ दो अन्य छोटे ध्रुवीय उपग्रहों इंस्पायर सैट-1 तथा आइएनएसटी-2टीडी को भी सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित किया गया। इनमें इंस्पायर सैट-1 को भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान तकनीक संस्थान द्वारा यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो बोल्डर स्थित लेबोरेटरी ऑफ एटमोस्फेरिक एंड स्पेस फिजिक्स के साथ मिलकर तैयार किया गया है। इसके अलावा इसमें एनटीयू सिंगापुर तथा एनसीयू ताइवान का भी योगदान है। 8.1 किलोग्राम वजनी इस उपग्रह का मिशन काल एक वर्ष है और इसके जरिये आयनोस्फीयर डायनेमिक्स तथा सूर्य की कोरोनल हीटिंग प्रक्रियाओं के बारे में शोध किया जाएगा। दूसरे छोटे टैक्नोलॉजी डेमोंस्ट्रेटर उपग्रह आईएनएस-2टीडी में एक थर्मल इमेजिंग कैमरा है, जिसके जरिये भूमि के तापमान, झीलों के पानी की सतह के तापमान इत्यादि का पता लगाया जाएगा। इस उपग्रह को भारत तथा भूटान के संयुक्त उपग्रह आईएनएस-2बी के पहले ही विकसित कर अंतरिक्ष में भेजा गया है, जो इसरो का तकनीक प्रदर्शन सैटेलाइट है। 17.5 किलोग्राम वजनी इस उपग्रह का मिशन काल छह माह का है, जिसके जरिये धरती की सतह, जलाशयों तथा झीलों में पानी की सतह के तापमान का आकलन और दिन-रात फसलों व वनों तथा तापीय निष्क्रियता का चित्रण किया जा सकेगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

शोहरत की लय में ढलने लगे यश ढुल

अरुण नैथानी

अभी हाल ही में भारत की झोली में अंडर-19 विश्व कप का खिताब डालने वाले कप्तान यश ढुल की यश पताका लहराने लगी है। यह कामयाबी इस मायने में खास थी कि उनकी टीम के पांच खिलाड़ी लीग मैचों के दौरान कोरोना पॉजिटिव हो गये थे। मगर यश ने हिम्मत नहीं हारी थी। वे क्वारंटीन पीरियड में शेडो गेम खेलते, टीवी में क्रिकेट मैच देखकर खिलाड़ी की जगह खुद की कल्पना करते। फिर जोरदार वापसी की। सेमीफाइनल में आस्ट्रेलिया की दिग्गज टीम के खिलाफ उस वक्त मोर्चा संभाला जब भारत के विकेट चटकने लगे थे। फिर उनका यादगार 110 रन का शतक भारत को जीत की दहलीज तक ले गया। पूरी दुनिया के दिग्गज क्रिकेटर कहने लगे कि यश जैसे खिलाड़ियों के हाथों में भारतीय क्रिकेट का भविष्य सुरक्षित है। देश लौटकर यश ने कहा था कि मेरी प्राथमिकता आईपीएल नहीं, रणजी खेलना है। उन्होंने दावा किया था कि मेहनत व अभ्यास से वे 18 महीनों में सीनियर टीम में जगह बना लेंगे। लेकिन बृहस्पतिवार को गुवाहाटी में खेले गये रणजी चैंपियनशिप में दिल्ली के लिए शतक लगाकर उन्होंने बताया कि टीम में वे 18 महीने से पहले ही जगह बना लेंगे। शायद माता-पिता ने जब उसका नाम यश रखा, उन्होंने उसका भविष्य बांच लिया था। रणजी के पहले ही मैच में शतक लगाकर यश, सचिन तेंदुलकर और रोहित के क्लब में शामिल हो गये हैं। वह भी तब जब दिल्ली की टीम संकट की ओर बढ़ रही थी। यश ने 133 गेंदों में तमिलनाडु की टीम के खिलाफ 113 रन बनाये। इस तरह इस विश्व विजेता टीम के कप्तान ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में यश पताका लहराकर क्रिकेट चयनकर्ताओं का ध्यान खींचा है कि वह भारतीय क्रिकेट का भविष्य है। वहीं यश की एक कामयाबी यह भी है कि आईपीएल के लिये दिल्ली कैपिटल्स ने उन्हें पचास लाख रुपये में अपनी टीम का हिस्सा बनाया है। इससे पहले यश ने अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप के सेमीफाइनल में अपने शानदार शतक से भारतीय टीम को फाइनल में पहुंचाया था। इस मैच में मजबूत आस्ट्रेलिया को भारतीय नवांकुरों ने 96 रन से मात दी थी और भारत लगातार चौथी बार अंडर-19 के फाइनल में खेल पाया। वे विराट कोहली व उन्मुक्त चंद के बाद विश्वकप में शतक जड़ने वाले तीसरे कप्तान बने। यह यश के शानदार सफर की शुरुआत है। निस्संदेह ढुल की बल्लेबाजी में कुछ जबरदस्त क्षमता है। वे खास हैं और भारतीय टीम का भविष्य सुरक्षित है। वेस्टइंडीज से लौटने के बाद देश में जगह-जगह सम्मान के चलते वे परिवार को भी समय नहीं दे पाये। विश्व कप की तैयारी में परिवार से दो माह तक दूर रहे। चैंपियनशिप जीतने के बाद वे अपनी क्रिकेट की पहली पाठशाला बाल भवन पहुंचना नहीं भूले, जहां उनके हुनर का निखार हुआ। साथ ही उन गुरुओं का आभार जताया जिन्होंने उसके क्रिकेट को संवारा। अंडर-19 विश्वकप जीतने के बाद एक कप्तान विराट कोहली तो चमके तो उन्मुक्त चंद न चमक सके। शीर्ष स्तर पर सफलता व असफलता के प्रश्न पर यश का कहना है कि मैं भविष्य के बारे में ज्यादा न सोचकर, विनम्र रहकर मेहनत करना चाहता हूं। वैसे यश में शारीरिक मजबूती के साथ जबरदस्त मानसिक मजबूती है। बहरहाल, आज यदि यश क्रिकेट की बगिया में महक रहे हैं तो उसके पीछे उनके परिवार का तप-त्याग है। मूल रूप से हरियाणा के रोहतक के यश ढल का परिवार पश्चिमी दिल्ली में जनकपुरी में रहता था। सेना में रहे दादा से उन्हें अनुशासन व मानसिक मजबूती मिली है। यश को दादा उंगली पकड़कर क्रिकेट अकादमी ले जाया करते थे। तब वे महज आठ साल के थे जब दादा रणजी क्रिकेटर प्रदीप कोचर की अकादमी लेकर गये। वर्ष 2017 में दादा जी का निधन हुआ तो पिता ने उनकी स्मृतियों को यश की ताकत बना दिया। उनका निधन हुआ तो अगले दिन यश मैदान में थे। फिर यह जिम्मेदारी पिता ने निभायी। पिता ने अपनी नौकरी उसके भविष्य को संवारने के लिये छोड़ दी। दादा की पेंशन से घर का खर्च चलता था। यश जब 12 साल के थे दिल्ली के बहुचर्चित सोनेट क्लब के खिलाफ अपनी टीम के बिखरने के बाद वे चालीस ओवर तक खेले। तब विपक्षी टीम के खिलाड़ियों ने उनके अनूठे प्रदर्शन पर उन्हें कंधे पर उठा लिया था। यश की हौसला अफजाई के लिये उनके कोच कोचर व मयंक उन्हें एक शतक लगाने पर सौ रुपये देते थे। वहीं जब विजय मर्चेंट ट्रॉफी में उन्होंने 188 रन पंजाब के खिलाफ बनाये तो कोच ने पांच सौ रुपये ईनाम में दिये, जिन्हें यश ने हमेशा संभालकर रखा। अंडर-19 विश्व कप में जब यश कोरोना संक्रमित हुए तो उनका परिवार बेहद चिंतित हुआ। खतरा था कि अपने करिअर के सबसे बड़े टूर्नामेंट से यश बाहर न हो जाये। परिवार ने कहा कि वे इसे एक चोट की तरह लें, कोविड न मानें। लेकिन यश ने कहा वह जल्दी क्रिकेट खेलेगा और टीम अंतिम आठ में होगी। बाद में हौसलों की जीत भी हुई। पश्चिमी दिल्ली के इस खिलाड़ी के जज्बे ने विश्वकप पर भारत की मोहर लगा दी। यश पश्चिमी दिल्ली के ही विराट कोहली की तरह मानसिक रूप से बेहद मजबूत हैं और संकट में टीम को उबारने का जज्बा रखते हैं। वह कहा करते थे कि

सू-दोकू नवताल -2051

		5			8			
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6						1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
			2			7		

सू-दोकू -2050 का हल

5	4	9	1	8	3	2	6	7
1	2	6	4	9	7	3	5	8
3	8	7	5	2	6	1	4	9
8	7	1	3	4	2	6	9	5
9	5	3	6	1	8	7	2	4
2	6	4	7	5	9	8	1	3
4	3	5	2	7	1	9	8	6
6	9	2	8	3	4	5	7	1
7	1	8	9	6	5	4	3	2

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3 X 3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

फिल्म वर्ग पहेली-2051

1		2		3		4		5	
		6							
7	8			9	10			11	
			12				13		
14		15		16		17			18
19				20	21			22	
		23					24		
25	26				27			28	
			29				30		
31						32			

बायें से दायें:-

1. अमिताभ, सलमान, जॉन, हेमा, रानी की फिल्म-3
3. 'हैलो हैलो बोल के' गीत वाली सुनील शेट्टी, शिल्पा शेट्टी की फिल्म-3
5. जैकी, अनिल, शत्रुघ्न, हेमा, टीना मुनीम की फिल्म-2
6. 'मैं लव तुम से' गीत वाली फिल्म-3
7. कंवलजीत, वहीदा की फिल्म-3
9. 'झूठी मूठी मितवा सांवन' गीत वाली फिल्म-3
11. नवीन निश्चल, प्राण, रेखा की 'ना सतरा से ऊपर' गीत वाली फिल्म-2
13. 'हर इक लब पर है' गीत वाली श्रेयस तलुदे, आयशा टकिया की फिल्म-2
15. शाहरूख, मनीषा, प्रीति, शिल्पा की फिल्म-2,1
17. अमिताभ, जया भादुड़ी की फिल्म-2
19. 'मुझे तुम याद' गीत वाली फिल्म-3
20. अमिताभ, गोविंदा, रजनीकांत, किमी की फिल्म-2
22. 'दिल में जिगर' गीतवाली फिल्म-2
23. हिंदी फिल्मोंका पहला 'ही-मैन' किसे कहा गया है-4
24. जीतेंन्द्र, जयप्रदा की एक पारिवारीक फिल्म-1
25. 'सौ सवालों का' गीत वाली धर्मेन्द्र, अनिलकपूर, मीनाक्षी की फिल्म-3
27. अमिताभ, जैकी, जावेद, कैटरीना, मधु, सीमा, जीनत की फिल्म-2
28. 'जुड़वाँ' में सलमान के साथ करिशमा के अलावा दूसरी नायिका कौन थी-2
29. राजेश खन्ना, शर्मिला टैगोर की फिल्म-3
31. फिरोज, संजय, मनीषा की 'आखिर तुम्हें आना है' गीत वाली फिल्म-4
32. 'मेरा दिल जिस दिल' गीत वाली अनिल, अक्षय, करीना की फिल्म-3

ऊपर से नीचे:-

1. राहुल राय, शीबा की फिल्म-3
2. आमिर खान, ग्रेसी सिंह की 'मधुबन में जो कन्हैया' गीत वाली फिल्म-3
3. 'जिन्हें हम भूलना चाहें वो' गीत वाली दीपक कुमार, रेहाना की फिल्म-3
4. शशिकपूर, राखी की 'आज मदहोश हुआ जाये रे' गीत वाली फिल्म-3
5. 'नाले नाले मैं चली' गीत वाली मिथुन, कबीर बेदी, संगीता की फिल्म-4
8. बॉबी, काजोल, मनीषा कोइराला की 'मेरे ख्वाबों में तू' गीत वाली फिल्म-2
10. 'अब चाहे सर फूटे या' गीत वाली राजेश खन्ना, राखी, शर्मिला टैगोर की फिल्म-2
12. कुमार गौरव, माधुरी की 'पहली बारिश मैं और तू' गीत वाली फिल्म-2
13. 'सजना साथ निभाना' गीत वाली राजेश खन्ना, बबीता की फिल्म-2
14. सुनीलदत्त, माला की 'आजा आजा रे तुझको मेरा प्यार' गीत वाली फिल्म-4
15. 'जान तन से' गीत वाली जैकी श्रॉफ, फरहा की फिल्म-4
16. प्रशांत, संध्या की 'तुम तो प्यार हो सजना' गीत वाली फिल्म-3
18. 'खुशी से खुदकुशी' गीत वाली फिल्म-5
21. सनी, जीतेंन्द्र, फरहा, जयाप्रदा की फिल्म-4
26. 'आँखों आँखों में हो गए' गीत वाली फिल्म-3
29. नसीर, अतुल, पूजा भट्ट की फिल्म-2
30. 'रंग दीन्हीं रंग दीन्हीं' गीत वाली फिल्म-2

फिल्म वर्ग पहेली-2050

पि	या	का	घ	र		ह	थ	क	ड़ी
ता	रा		रौं		दो	स्ती		न्या	
	ना	खु	दा		बा		अं	दा	ज
ह		श		कुं	द	न		न	
म	ज	बु	र		न	ज	र		म
सा	या		त	ब्बू		रा		डॉ	न
या		आ	न		कि	ना	रा		च
	गै	र		मै	ला		म	वा	ली
प्या		पा	पी			रा	जा		
सा	ग	र		रा	खी		ने	पा	ल

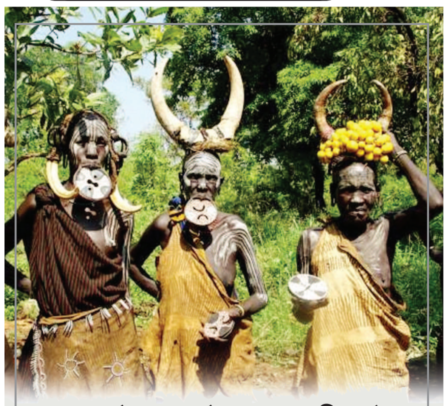

इस देश में रहती है दुनिया की सबसे खूंखार जनजाति, अजीबोगरीब हैं रस्मों रिवाज

दुनिया में आदिवासियों की कई जनजाति मौजूद है, कुछ जनजाति काफी खूंखार मानी जाती है। आज भी यह अपने पुरानी परंपराओं को पूरे सम्मान से निभाते चले आ रहे हैं। आम इंसान से हटकर यह जंगलों में रहना पसंद करते है, सरकार भी इनकी निजि जिंदगी में दखल देना सही नहीं समझती, इनके अधिकारों की पूरी रक्षा की जाती है। पूरी दुनिया में सबसे खतरनाक मुर्सी जनजाति मानी जाती है, यह इथियोपिया के जंगलों में रहते हैं।

क्यों है सबसे खतरनाक जनजाति?

दक्षिण इथियोपिया और सूडान बॉर्डर पर स्थित ओमान घाटी में रहने वाली यह जनजाति दुनियाभर की खतरनाक जनजातियों में गिनी जाती है, इस जनजाति के लोग किसी की भी हत्या करने से पहले नहीं सोचते, उनके लिए यह एक गौरव की बात होती है। यह जनजाति कई साल पुराने खास तरीके से बने हथियारों का इस्तेमाल करती है, इनसें किसी भी व्यक्ति को मिनटों में मारा जा सकता है। यह एक खास वजह है जो इस जनजाति को दुनिया में सबसे खतरनाक बनाता है।

ऐसे अजीबोगरीब है इनके रस्मों रिवाज

मुर्सी जनजाति आज भी सलों से चली आ रही परंपरा को मानती है, इनके यहां दिलदहलाने देने वाली बॉडी मॉडिफिकेशन प्रक्रिया की जाती है औरतों के साथ, उनके निचले होंठ में एक गोल लकड़ी या मिट्टी से बनी डिस्क पहनाई जाती है। ऐसा करने की वजह चौंकाने वाली है कहा जाता इससे महिलाएं कम खूबसूरत दिखेंगी और उन्हें किसी की बुरी नजर नहीं लगेगी।

बिना इजाजत क्षेत्र में जाने से मिलती है मौत

लगभग 10 हजार आबादी वाले इस मुर्सी समुदाय के लोग काफी खतरनाक होते हैं, इनकी इजाज्त लिए बिना आप इनके इलाकें में कदम नहीं रख सकते हैं। यह मानते है कि दूसरों को मारे बिना जीवन चक्र नहीं चल सकता है, अगर वह ऐसा नहीं कर पाते हैं तो उनके जीवित रहने का कोई मतलब नहीं है इससे बेहतर होगा की वह खुद को खत्म कर लें। अभी तक इस जनजाति ने 100 से ज्यादा लोगों की जान ले ली है, अगर आप गलती से भी इनके इलाके में चले जाते हैं तो यह आपको मार डालेंगे।

सरकार ने लगाया है बैन?

मुर्सी जनजाति के खूंखार व्यवहार को देखते हुए सरकार ने लोगों को इन से संपर्क करने पर बैन लगाया दिया है। बाहर आए राष्ट्रप्रमुख सरकारी मेहमानों को एक खास आर्म्ड गार्ड के सुरक्षा घेरे इन्हें देखने के लिए भाजा जाता है। यह सुरक्षा घेरा लोगों को इस समुदाय के गेरों से बचाता है।

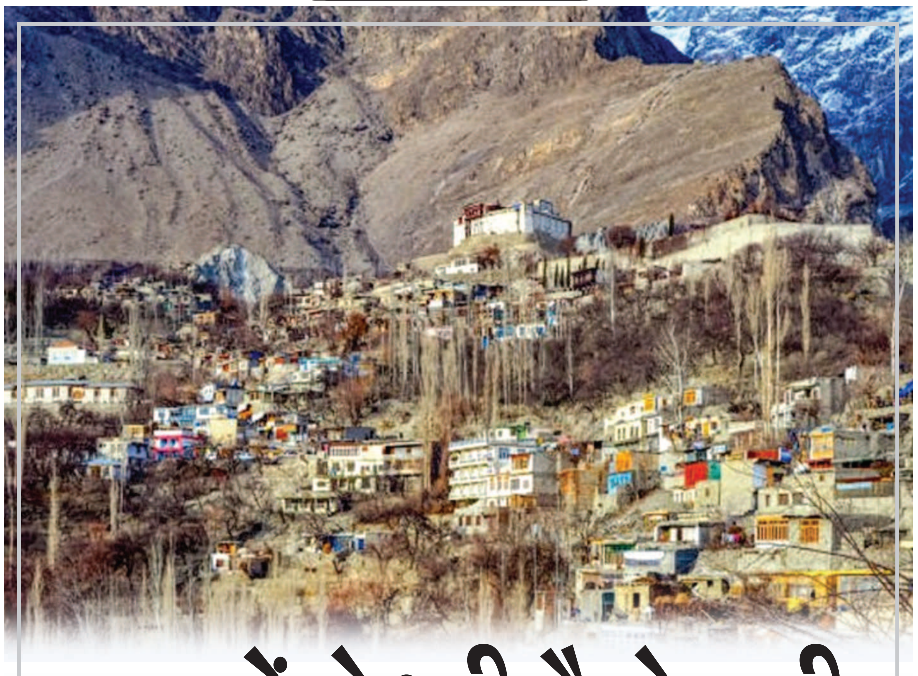

रहस्यों से भरी है ये घाटी

यहां रहने वाले लोग 150 साल तक रहते हैं जिंदा

दुनिया में कई रहस्य छिपे हुए हैं। वैज्ञानिक इन रहस्यों के बारे में लगातार जानने की कोशिश कर रहे हैं। पड़ोसी देश पाकिस्तान की एक घाटी भी रहस्यों से भरी हुई है। नॉर्थ पाकिस्तान की हुंजा वैली में लोग 120 साल से लेकर 150 साल तक जिंदा रह सकते हैं, तो वहीं पाकिस्तान में लोगों की औसत आयु सिर्फ 67 साल है। यहां पर हुंजा समुदाय के लोग रहते हैं।

हुंजा वैली में रहने वाले लोगों की सेहत का राज क्या है? यह अभी दुनिया के ज्यादातर हिस्सों तक नहीं पहुंच पाया है। हुंजा समुदाय के लोगों की आयु बहस का विषय भी रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि यहां रहने वाले लोग दुनिया से दूर एक प्रकार के आइसोलेशन में रहते हैं और वह अपनी कुछ खास आदतों की वजह से अधिक सेहतमंद हैं। आखिर पाकिस्तान की इस घाटी के लोग इतने सालों तक कैसे जिंदा रहते हैं यह अभी रहस्य है।

माना जाता है कि इस घाटी में रहने वाले हुंजा समुदाय के लोग ज्यादा उम्र तक बच्चे पैदा कर सकते हैं जो कि असाधारण है। यहां पर न तो लोग कभी बीमार होते हैं और न ही उन्हें कैंसर जैसी घातक बीमारियां होती हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, मुताबिक हुंजा समुदाय की महिलाएं 60 से 90 वर्ष की आयु तक गर्भधारण कर सकती हैं। इस दावे पर शायद किसी साधारण व्यक्ति को यकीन हो।

उत्तर पाकिस्तान के बिल्कुल सूनसान इलाके में हुंजा घाटी स्थित है। यहां रहन वाले लोग किसी भी प्रकार का प्रोसेस्ड फूड नहीं खाते हैं। वह सब्जियां, दूध, अनाज और फल खासतौर पर खूबानी को खाते हैं। ग्लेशियर का पानी पीने के साथ-साथ उनके नहाने के काम भी आता है।

लोगों की नहीं होती हैं जानलेवा बीमारियां

हुंजा समुदाय के लोग खूबानी फल को बहुत शौक से खाते हैं। माना जाता है कि इस फल के जूस को पीकर वहां के लोग कई महीनों तक जिंदा रह सकते हैं। खूबानी के बीज में एमीग्डालिन पाया जाता है जो विटामिन बी-17 का सोर्स होता है। इसकी वजह से लोगों को कैंसेर जैसी घातक बीमारियां भी नहीं होती हैं। यह लोग अपने खाने-पीने में कच्चे फल और सब्जियों को प्रमुखता देते हैं। यह लोग मीट कम खाते हैं। यह स्थान बाकी दुनिया से कटा हुआ है और इस वजह से लोगों को साफ हवा भी आसानी से मिलती है। बताया जाता है कि हुंजा समुदाय के लोग हर दिन नियमित रूप से योगा करते हैं जिसमें सांस लेने की टेक्निक और ध्यान भी शामिल होता है। यहां के लोग एनर्जी मैनेजमेंट और रिलैक्सेशन पर भरोसा करते हैं। लगातार काम करने के बीच यहां के लोग आराम करने को प्राथमिकता देते हैं और इमोशनल स्ट्रेस को बढ़ाने वाली चीजों से दूर रहते हैं।

रहस्यों से भरा है समुदाय

यह समुदाय रहस्यों से भरा हुआ है। माना जाता है कि आज तक यहां पर परियां हैं। लोगों का मानना है कि हुंजा वैली के आसपास आज भी परियां रहती हैं और यह स्थानीय लोगों की बाहरी खतरों से रक्षा करती हैं। भेड़, बकरियां चराने वाले चरवाहों के मुताबिक, ऊंचाई वाली जगहों पर जाने पर परियों की आवाज उन्हें सुनाई देती है। यहां के एक व्यक्ति ने एक इंटरव्यू में बताया था कि परियां इंसानों जैसी ही दिखती हैं और सुनहरे बाल और हरे रंग के कपड़ों में रहती हैं।

हॉलीवुड फिल्म में हुआ है घाटी जिक्र

साल 1930 में हॉलीवुड फिल्म लॉस्ट होराइजन रिलजी हुई थी जिसमें हुंजा समुदाय का जिक्र था। फिल्म जेम्स हिल्टन के एक नॉवेल पर बनी थी और इसमें शांगरी-ला को पहली बार दिखाया गया था। फिल्म में अंग्रेजी सेना का काफिला चीन से आते समय हिमालय के क्षेत्र में आकर रुक जाता है। फिल्म में स्थानीय लोगों की मुलाकात उस क्रू से होती है और बर्फीले तूफान की वजह से उन्होंने हुंजा में शरण ली।

दादी का मोती

मोती एक शिकारी कुत्ता था। पतला-दुबला, लंबा, देखने में जरा भी खूबसूरत नहीं लगता था। पर उसकी आंखें बड़ी थीं। हमेशा प्यार से चमकती रहती थीं। दादी को वह बहुत प्यार करता था। दादी भी उसे बहुत चाहती थीं। दादी गांव में रहती थीं। परिवार बड़ा था। मकान भी बहुत बड़ा था और गांव में उन दिनों डाकू भी खूब आते थे। रात को अकसर कहीं न कहीं डाका पड़ ही जाता था। इसीलिए लोग कुत्ते पालते थे। शिकारी कुत्ता डाकुओं को देखते ही पहचान लेता था। फिर तो वह खतरनाक हो उठता था। उसके हमले से बचना कोई मामूली बात नहीं थी। इसीलिए मोती की बहुत पूछ होती थी। वह सबका प्यारा था। वह घर के किसी आदमी पर कभी हमला नहीं करता था। प्यार इतना करता कि लोग परेशान हो जाते। वह गांव, गंगा नदी से कुछ ही दूर था। कार्तिक के महीने में वहां बड़ा मेला लगता था। दादी हर साल उस मेले में हम सब बच्चों को भी लेकर जाती थीं। उनकी रखवाली के लिए मोती भी जाता था। बच्चों को वह खूब पहचानता था। उनका दोस्त जो बन गया था।

एक बार ऐसा हुआ कि मोती उस मेले में गायब हो गया। बहुत ढूंढ़ा, लेकिन कहीं पता नहीं लगा। किसी ने कहा कि उस पार चला गया है, उसने उसे नदी में घुसते देखा था। मेला खत्म हो गया, लेकिन मोती नहीं आया। हमने समझ लिया कि कोई उसे पकड़कर ले गया है या वह नदी में डूब गया है। सभी बहुत दुखी थे, लेकिन दादी के दुख की मत पूछो। रोत-रोते उनकी आंखें लाल हो गईं। सब लोग लौट आए। रुकते भी कब तक! फिर बहुत दिन बीत गए। शायद तीन महीने बाद की बात है। जाड़े के दिन थे। अचानक आधी रात को दरवाजे पर खड़खड़ाहट शुरू हुई। हां, एक बात बताना तो मैं भूल ही गया था। मकान का दरवाजा बहुत बड़ा था और वह लकड़ी का नहीं था, टीन का था। इसलिए जरा सी भी आहट होती, तो बहुत शोर होता था। रात का सन्नाटा था। टीन के दरवाजे पर जो खड़खड़ाहट शुरू हुई, तो सब जाग उठे। समझ गए कि डाकू आ गए हैं। सब डर गए, लेकिन यह क्या? खड़खड़ाहट हुए जा रही है, हुए जा रही है, रुकती ही नहीं। कभी कम, कभी तेज। डाकू तो ऐसा नहीं कर सकते। वे तो एकदम दरवाजा तोड़ देते हैं। कौन है यह? आदमी है, तो आवाज क्यों नहीं देता?

तभी दादी एकदम चिल्ला पड़ीं, मेरा मोती आया है। सबने दादी की ओर देखा। उनकी आंखों में आंसू थे, लेकिन भला मोती कहां से आता? वह दरवाजा कैसे खड़खड़ाएगा? लेकिन दादी ने तुरंत लालटेन उठाई और दरवाजा खोलने के लिए चल पड़ीं। उन्हें रोकना चाहा, लेकिन वह नहीं रुकीं। अब तो सबको ही पीछे-पीछे चलना पड़ा। भला, उन्हें अकेले कैसे जाने देते। अगर डाकू हुए तो!

बस आगे-आगे हाथ में लालटेन लिए दादी थीं और पीछे थे कोई पंद्रह-बीस औरतें और आदमी हाथों में लाठियां लिए हुए। एक-दो के पास छुरे भी थे। पर डर सब रहे थे। जैसे-जैसे दरवाजे के पास आ रहे थे, एक और आवाज उनके कानों में पड़ रही थी। वह मोती की आवाज थी। हां, हां, यह मोती ही है।

तभी किसी ने तेजी से आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया।

सचमुच वह मोती था। दरवाजा खुलते ही वह तीर की तरह लपका और दादी से आ चिपटा। वह पागलों की तरह कभी इस कंधे पर झपटता, कभी उस कंधे पर चढ़ता, कभी मुंह चूमता और कभी अपना सिर उनकी गोद में रख देता। और दादी थीं कि रोए जा रही थीं। बोल रही थीं, मेरा मोती, मेरा बेटा मोती, तू कहां गया था रे? मैं तुझे रोज याद करती थी और जानती थी कि तू एक दिन आएगा।

मोती केवल दादी से ही नहीं मिला, वह घर के हर सदस्य के पास गया। उनके पास भी गया, जो अभी तक सोए पड़े थे। सबके साथ उसने वैसा ही प्यार दिखाया। वह रात कब बीती, कब सवेरा हुआ, किसी को पता नहीं चला। लेकिन यह बात सभी जानते हैं कि अगले दिन दादी ने देवी के मंदिर में प्रसाद चढ़ाने के बाद सबको दो-दो पेड़े दिए थे। पूरे एक हफ्ते तक मोती की जो आवभगत हुई थी, उसकी चर्चा तो बच्चे बड़े हो जाने पर भी किया करते थे। लेकिन यही मोती एक दिन पागल हो गया। गांव में डाकू आते थे, तो गीदड़ भी आते थे। मोती अकसर उन गीदड़ों को मार भगाता था। कभी-कभी गीदड़ भी उसे काट लेते थे। एक दिन उन गीदड़ों में शायद कोई पागल गीदड़ भी आ गया था। उसी ने मोती को काट लिया और मोती पागल हो गया। उसके मुंह से बराबर राल टपकने लगी। उसकी आंखों का रंग बदलने लगा, लेकिन उसका प्यार अब भी कम नहीं हुआ था। अब लोग उससे डरते थे। दादी भी डरती थीं, रोती थीं। जिसे वह इतना प्यार करती थीं, उसे अब गोद में नहीं ले सकती थीं। मोती ने अभी तक किसी को काटा नहीं था, लेकिन काट तो सकता था। पागल कुत्ते चुपचाप काट लेते हैं। भौंकते तक नहीं। मोती ने किसी को काट लिया तो! पागल कुत्तों के काटने का उन दिनों कोई इलाज भी नहीं था। इसीलिए लोगों ने कहा, मोती को मार डालो। कैसी बुरी सलाह थी। दादी रोने लगीं। सब लोगों के दिल भर आए, लेकिन और कोई रास्ता भी तो नहीं था। मोती को मारना ही होगा।

फिर भी दो-तीन दिन बीत गए। इसी बीच में क्या हुआ कि घर का एक छोटा बच्चा अकेला सड़क पर निकल आया। वह धीरे-धीरे बाजार की ओर चल पड़ा। शाम का वक्त था। बैलगाड़ियां आ-जा रही थीं। अचानक एक गाड़ी के बैल भड़क उठे। वे तेजी से दौड़ने लगे। उनके ठीक सामने ही वह बच्चा चल रहा था। लोगों की निगाह उस पर पड़ी। वे चिल्लाए, बच्चे को बचाओ, बच्चे को बचाओ।

दौड़ते बैलों को रोकना आसान काम नहीं था। एकाएक कोई आदमी सामने नहीं आया। लेकिन मोती यह सब देख रहा था। वह तेजी से झपटा। पहले जब कभी ऐसा होता था, तो मुंह से कपड़ा पकड़कर खींच लेता था और बच्चे को सड़क से दूर ले जाता था, लेकिन अब तो वह पागल था। देखने वाले डर गए। कहीं उसके दांत बच्चे के बदन में गए तो। लेकिन हुआ क्या? मोती तेजी से झपटा और उसने अपनी पीठ से धक्का देकर, बच्चे को सड़क से बाहर धकेल दिया। उसे मुंह से नहीं पकड़ा।

लोगों ने यह सब देखा, तो अचरज से दांतों तले उंगली दबा ली। सब कहने लगे, इतना समझदार कुत्ता! बीमार है, फिर भी बच्चे को बचा लिया। '

इस साल क्रेडिट कार्ड से खर्च करने में कतरा रहे भारतीय, त्योहारी सीजन के बाद आई कमी

नई दिल्ली ।

त्योहारी सीजन के बाद भारतीय उपभोक्ताओं द्वारा क्रेडिट कार्ड से किए जाने वाले खर्च में कमी देखने को मिल रही है। आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज ने एक नोट में कहा है कि जनवरी और फरवरी में देश में औसत मासिक कुल क्रेडिट कार्ड खर्च 84,000 करोड़ रुपए से 88,000 करोड़ रुपए के बीच रहने की उम्मीद है, जो दिसंबर तिमाही की तुलना में बेहद कम है। रिपोर्ट के मुताबिक, देश के क्रेडिट कार्ड उपभोक्ताओं ने दिसंबर तिमाही में कुल 94,700 करोड़ रुपए खर्च किया था। ब्रोकरेज हाउस ने कहा कि इस साल की शुरुआत से अब तक जबकि डेढ़ महीने से ज्यादा समय बीत चुका है प्राप्त डाटा मासिक औसत क्रेडिट कार्ड वित्त वर्ष 22 में अब तक 76,700 करोड़ रुपये खर्च दिखा रहा है। दिसंबर 2021 में क्रेडिट कार्ड से डेबिट कार्ड खर्च का अनुपात 1.39 गुना है, जो अप्रैल 2019 के बाद सबसे अधिक है। क्रेडिट कार्ड जारी करने वालों की बात करें तो इस मामले में एचडीएफसी बैंक की बाजार हिस्सेदारी दिसंबर में 25.1 फीसदी के साथ सबसे आगे है। इसके बाद भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) कार्ड्स का नंबर आता है, जिसकी हिस्सेदारी 19.8 फीसदी थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उद्योग स्तर पर प्रति कार्ड बकाया क्रेडिट कार्ड (सीआईएफ) दिसंबर 2021 तक 18,069 रुपए पर स्थिर रहा। क्रेडिट कार्ड जारी करने वाल बैंकों में प्रमुख रूप से आईसीआईसीआई बैंक ने सबसे मजबूत वृद्धि दर्ज की, उसके बाद एक्सिस बैंक और कोटक महिंद्रा बैंक का स्थान रहा। इसके अलावा, अमेरिकन एक्सप्रेस और सिटी इंडिया में क्रमशः 11 फीसदी और 5 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। मोतीलाल ओसवाल का मानना है कि एसबीआई कार्ड्स, आईसीआईसीआई बैंक और एक्सिस बैंक जैसे खिलाड़ी मजबूत प्रदर्शन करना जारी रखेंगे ।

एनसीएलएटी ने गो एयर की याचिका खारिज की

नई दिल्ली।

राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय न्यायाधिकरण (एनसीएलएटी) ने सस्ती विमानन सेवा प्रदाता गोएयर की तरफ से दायर अपील को खारिज कर दिया है। इसमें सोविका एविएशन सर्विसेज के खिलाफ दिवाला प्रक्रिया वापस लेने के आदेश को चुनौती दी गई थी। राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) की मुंबई पीठ ने 23 सितंबर, 2021 को समाधान पेशेवर द्वारा सोविका एविएशन सर्विसेज के खिलाफ कर्ज समाधान प्रक्रिया दायर आवेदन को मंजूरी दे दी थी। इसी फैसले को चुनौती दी गई थी। गो एयरलाइन भी एक परिचालक कर्जदाता थी जिसने समाधान प्रक्रिया के बारे में पता चलने पर छह सितंबर 2021 को अपना दावा पेश किया था। इस पर समाधान पेशेवर ने 10 सितंबर 2021 को अपना पक्ष रखा। समाधान पेशेवर गो एयर की तरफ से किए गए दावों का परीक्षण कर ही रहा था कि एनसीएलटी ने 23 सितंबर 2021 को दिवालिया संहिता की धारा 12ए के तहत दायर अर्जी को स्वीकार कर लिया। खिलाफ दिवाला प्रक्रिया वापस लेने पर पहले ही सहमति जता दी थी। इसके खिलाफ एनसीएलएटी में दायर अपील की सुनवाई करते हुए दो सदस्यीय पीठ ने कहा कि कर्जदाताओं की समिति ने सोविका एविएशन के खिलाफ दिवाला प्रक्रिया वापस लेने पर पहले ही सहमति जता दी थी।

भारत-यूएई व्यापार समझौते का निर्यातक संगठनों ने स्वागत किया

नयी दिल्ली ।

भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच मुक्त व्यापार समझौता संपन्न होने का निर्यातकों ने स्वागत करते हुए कहा है कि इससे देश के निर्यात को बढ़ाने तथा रोजगार सृजन में मदद मिलेगी। परिधान निर्यात संवर्धन परिषद (एईपीसी) के अध्यक्ष नरेंद्र गोयनका ने कहा कि इस समझौते से यूएई में भारत की स्थिति और मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि इस समझौते से भारतीय रेडीमेड कपड़ों पर पांच प्रतिशत शुल्क खत्म हो जाएगा, जिससे भारतीय कपड़ा उद्योग को बढ़त मिलेगी। भारतीय निर्यात संगठन महासंघ (फिओ) के अध्यक्ष ए शक्तिवेल ने कहा कि यह समझौता भारतीय निर्यात के लिए फायदेमंद होगा। उन्होंने कहा कि खासतौर पर कृषि और प्रसंस्करण, समुद्री उत्पादों, रत्न और आभूषण, परिधान और वस्त्र, चमड़े और जूते जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों को इससे लाभ होगा। भारत-अरब परिषद के अध्यक्ष विक्रमजीत साहनी ने कहा कि इस समझौते से वार्षिक डॉलर से बढ़कर 100 अरब डॉलर होने की उम्मीद है। द्विपक्षीय व्यापार के मौजूदा 60 अरब डॉलर से बढ़कर 100 अरब डॉलर होने की उम्मीद है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को भारत और यूएई के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर हस्ताक्षर होने के बाद कहा था कि व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) मई में प्रभावी हो सकता है और पहले दिन से ही भारतीय हित से जुड़े करीब 90 प्रतिशत उत्पादों के लिये यूएई को निर्यात का रास्ता खुल जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अबु धाबी के शहजादा शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान की ऑनलाइन शिखर वार्ता के दौरान व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। समझौते पर भारत की तरफ से गोयल और यूएई के अर्थव्यवस्था मामलों के मंत्री अब्दुल्ला बिन तौक अल मर्री ने हस्ताक्षर किये।

आरबीआई के समीक्षा अधिकरण ने 100 परिपत्रो को वापस लेने के सुझाव दिए

मुंबई।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को कहा कि नियमन समीक्षा प्राधिकरण ने व्यर्थ हो चुके करीब 100 परिपत्रों को वापस लेने के साथ ही कुछ पेपर आधारित रिटर्न को खत्म करने का भी सुझाव दिया है। आरबीआई ने नियमन के दायरे में शामिल इकाइयों पर अनुपालन बोझ कम करने के उद्देश्य से दूसरे नियमन समीक्षा प्राधिकरण (आरआरए 2.0) का गठन किया हुआ है। इसी प्राधिकरण ने रिजर्व बैंक को कुछ सुझाव दिए हैं। आरबीआई ने एक बयान में कहा, ÷आरआरए ने अपनी सिफारिशों की दूसरी कड़ी में करीब 100 अन्य परिपत्रों को वापस लेने का सुझाव दिया है। इस बीच केंद्रीय बैंक ने कई परिपत्रों को वापस लेने और रिटर्न को स्थगित करने एवं ऑनलाइन प्रस्तुति से जुड़ी कई अधिसचूनाएं भी जारी कीं। प्राधिकरण ने गत नवंबर में सौंपी गई अपनी पहली सिफारिश में करीब 150 परिपत्रों को वापस लेने की अनुशंसा रिजर्व बैंक से की थी। इसके साथ ही अपने एक आंतरिक समूह की सिफारिशों के आधार पर प्राधिकरण ने पेपर-आधारित रिटर्न जमा करने की व्यवस्था खत्म करने का सुझाव दिया है। इसके अलावा करीब 65 नियामकीय रिटर्न को दूसरे रिटर्न के साथ समाहित करने या बंद करने की भी बात कही है या फिर उन्हें ऑनलाइन रिटर्न में बदलने का सुझाव दिया है। आरबीआई ने कहा, ÷इन सुझावों से इकाइयों के लिए नियामकीय अनुपालन के सहज होने की उम्मीद है। इसके साथ ही सटीकता, गति एवं जानकारी उपलब्ध कराने की गुणवत्ता भी सुधरने की संभावना है।

संक्षिप्त समाचार

फरवरी में महंगाई दर में आ सकती है नरमी, फिलहाल ग्रोथ ज्यादा बड़ी चिंता: रिपोर्ट

बिजनेस डेस्क। भारत की कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स आधारित महंगाई फरवरी में जनवरी के मुकाबले कम रहने की उम्मीद है। यह बयान मोतीलाल ओस्वाल फाइनेंशियल सर्विसेज ने दिया है। इस बात का ध्यान रखें कि कमोडिटी की ज्यादा कीमतें, खासतौर पर परिवहन के तेल की कीमतों ने जनवरी 2022 में महंगाई से ज्यादा स्तर में योगदान दिया है। इसके नतीजे में भारत में महंगाई का मुख्य आंकड़ा- कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स सालाना आधार पर बढ़ गई है। इंडेक्स पिछले महीने बढ़कर 6.01 फीसदी पर पहुंच गया, जो दिसंबर 2021 में 5.66 फीसदी और जनवरी 2021 में 4.06 फीसदी पर रिकॉर्ड किया गया था। इसके साथ रिटेल महंगाई की दर भारतीय रिजर्व बैंक के लक्ष्य को पार कर गई थी। केंद्रीय बैंक ने दो से छह फीसदी की रेंज में सीपीआई रहने का लक्ष्य रखा है। इसके अलावा, कंज्यूमर फूड प्राइस इंडेक्स में बढ़ोतरी की दर, जो खाने के उत्पाद की रिटेल कीमतों में बदलाव को मापती है, दिसंबर 2021 के 4.05 फीसदी से बढ़कर पिछले महीने 5.43 फीसदी पर पहुंच गई। मोतीलाल ओस्वाल फाइनेंशियल सर्विसेज ने कहा कि ऐसी उम्मीद है कि सीपीआई अपने सबसे ऊंचे स्तर पर पहले ही पहुंच चुकी है और यह सालाना आधार पर फरवरी 2022 में कम हो जाएगी। उसने कहा कि इसके अलावा भारत में इस समय महंगाई से ज्यादा बड़ी चिंता ग्रोथ है। उसने आगे कहा कि वे रियल जीडीपी के बाजार के 6 फीसदी के अनुमान के बदले 5 से 5.5 फीसदी पर बढ़ने की उम्मीद करते हैं। वे मॉनेटरी पॉलिसी के भारत में धीरे-धीरे सामान्य होने की उम्मीद कर रहे हैं।

अनुज जैन को कंसाई नेरोलैक ने बनाया नया प्रबंध निदेशक

नयी दिल्ली । कंसाई नेरोलैक पेंट्स लिमिटेड (केएनपीएल) ने अनुज जैन को अपना प्रबंध निदेशक नियुक्त किया है। नई नियुक्ति अप्रैल 2022 से प्रभावी होगी। जैन मौजूदा प्रबंध निदेशक एवं वाइस चेयरमैन एच एम भरुका का स्थान लेंगे जिनका कार्यकाल 31 मार्च 2022 को पूरा होने जा रहा है। केएनपीएल ने एक नियामकीय सूचना में जैन को नया प्रबंध निदेशक बनाए जाने की जानकारी दी। उसने कहा कि कंपनी के निदेशक मंडल की शुक्रवार को हुई बैठक में जैन को पांच साल के लिए प्रबंध निदेशक बनाने का फैसला लिया गया। हालांकि नई नियुक्ति कंपनी के शेयरधारकों की मंजूरी मिलने के बाद ही प्रभावी हो पाएगी। अनुज जैन 1990 में एक मैनेजमेंट ट्रेनी के तौर पर कंपनी से जुड़े थे और उसके बाद से कई अहम पदों पर काम कर चुके हैं। वह अप्रैल 2018 से ही कार्यकारी निदेशक के तौर पर अपनी सेवाएं दे रहे थे।

फ्यूचर रिटेल ने यूएसडी नोट्स पर 1.4 करोड़ डॉलर का ब्याज चुकाया

नई दिल्ली। कर्ज में डूबी कंपनी फ्यूचर रिटेल ने अमेरिकी डॉलर में देय ऋणपत्र (यूएसडी नोट्स) पर ब्याज के रूप में 1.4 करोड़ अमेरिकी डॉलर (लगभग 104.55 करोड़ रुपए) का भुगतान किया है। सिंगापुर शेयर बाजार में सूचीबद्ध इन नोट्स पर कंपनी का पिछले महीने से ब्याज बकाया था। फ्यूचर रिटेल ने शेयर बाजार को बताया कि यूएसडी नोट्स पर ब्याज का भुगतान करने के लिए उसे 30 दिनों की रियायत अवधि मिली हुई थी। फ्यूचर रिटेल बिग बाजार, ईजीडे और हेरिटेज जैसी खुदरा श्रृंखलाओं का संचालन करती है। फ्यूचर समूह की फर्म ने कहा, ''हम यह बताना चाहेंगे कि 18 फरवरी 2022 को कंपनी ने यूएसडी नोट्स पर ब्याज के रूप में 1.4 करोड़ अमेरिकी डॉलर का भुगतान किया है।''वर्ष 2025 में देय इन नोट्स पर 5.60 प्रतिशत वर्ष 2025 में देय इन नोट्स पर 5.60 प्रतिशत की दर से ब्याज देना है।

ताकुया त्सुमुरा होंडा कार्स इंडिया के नए अध्यक्ष और सीईओ बनाए गए

नयी दिल्ली । जापानी वाहन निर्माता कंपनी होंडा ने शनिवार को कहा कि उसने होंडा कार्स इंडिया लिमिटेड (एचसीआईएल) के नए अध्यक्ष और सीईओ के रूप में ताकुया त्सुमुरा को नियुक्त किया है। यह नियुक्ति एक अप्रैल 2022 से प्रभावी होगी। यह नियुक्ति होंडा मोटर कंपनी लिमिटेड द्वारा सालाना प्रबंधन में होने वाले बदलाव के हिस्से के रूप में की गई है। नए अध्यक्ष और सीईओ के रूप में 54 वर्षीय ताकुया गाकू नकानिशी की जगह लेंगे जो भारत से एशिया और ओशिनिया क्षेत्र में होंडा के ऑटोमोबाइल व्यवसाय के महाप्रबंधक के रूप में स्थानांतरित किये गये हैं। होंडा ने एक बयान में कहा कि भारत में अपने चार साल के कार्यकाल के दौरान नकानिशी ने एचसीआईएल के अध्यक्ष और सीईओ के रूप में भारतीय ऑटो उद्योग के सबसे कठिन व्यावसायिक दौर में से एक यानी अभूतपूर्व कोविड संकट एवं मंदी के दौरान कंपनी को आगे बढ़ाया। इन वर्षों में कंपनी ने अपने व्यापार संविधान को मजबूत करने की दिशा में एचसीआईएल के संचालन के दौरान कुछ कठिन लेकिन महत्वपूर्ण निर्णय लिए। ताकुया होंडा के साथ 30 वर्षों से जुड़े हुए है। उन्होंने थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, चीन, जापान, तुर्की, यूरोप और एशिया और ओशिनिया क्षेत्रों सहित कई अंतरराष्ट्रीय बाजारों में काम किया है। वह 1997 से 2000 तक भारत सहित दक्षिण एशियाई देशों के प्रभारी थे।

भारत और यूएई के बीच मुक्त व्यापार समझौता, पांच साल में 100 अरब डॉलर पहुंचेगा व्यापार

नई दिल्ली।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को कहा कि भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर होने से द्विपक्षीय व्यापार को अगले पांच साल में 100 अरब डॉलर तक पहुंचाने और लाखों की संख्या में रोजगार सृजित करने में मदद मिलेगी। गोयल ने भारत औक यूएई के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर हस्ताक्षर होने के बाद संवाददाताओं से कहा कि व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) मई में प्रभावी हो सकता है और पहले दिन से ही भारतीय हित से जुड़े करीब 90 प्रतिशत उत्पादों के लिये यूएई को निर्यात का रास्ता खुल जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अबु धाबी के शहजादा शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान की ऑनलाइन शिखर वार्ता के दौरान व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। समझौते पर भारत की तरफ से गोयल और यूएई के अर्थव्यवस्था मामलों के मंत्री अब्दुल्ला बिन तौक अल मर्री ने हस्ताक्षर किए। दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रों में संबंधों को और मजबूत बनाने को लेकर रूपरेखा भी जारी की। मुक्त व्यापार समझौते से भारत और संयुक्त अरब अमीरात की कंपनियों को महत्वपूर्ण लाभ मिलेंगे। इसमें बेहतर बाजार पहुंच और कम शुल्क दरें शामिल हैं। इस एफटीए से अगले पांच साल में दोनों देशों का द्विपक्षीय व्यापार मौजूदा 60 अरब डॉलर से बढ़कर 100 अरब डॉलर पहुंच जाने की उम्मीद है। उल्लेखनीय है कि भारत और यूएई ने व्यापार समझौते के लिये औपचारिक बातचीत पिछले साल सितंबर में शुरू की थी। कुल 881 पृष्ठ के समझौते को रिकार्ड 88 दिनों में ही पूरा कर लिया गया। गोयल ने कहा कि यह व्यापक और सतंतुलित व्यापार समझौता है। मंत्री ने कहा, ''यह एक नया उल्लेखनीय समझौता है जिसका लाभ दवा उद्योग को पहली बार मिला है। यह यूएई में हमारे उत्पादों के लिए दरवाजे खोलेगा... व्यापार केंद्र की वजह से यूएई पश्चिम एशिया के अन्य देशों और पूरे अफ्रीकी महाद्वीप के के लिये द्वार है।'' इस समझौते से कपड़ा, हथकरधा, रत्न और आभूषण, चमड़ा और जूता-चप्पल जैसे श्रम गहन क्षेत्रों में 10 लाख नौकरियों के अवसर बनेंगे।

दवा क्षेत्र के बारे में गोयल ने कहा कि संयुक्त अरब अमीरात ने सहमति व्यक्त की है कि यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, कनाडा या ऑस्ट्रेलिया द्वारा अनुमोदित भारत में बने चिकित्सा उत्पादों को आवेदन जमा करने के 90 दिनों के भीतर बाजार पहुंच और नियामकीय मंजूरी प्राप्त होगी। जहां यूएई भारतीय आभूषणों पर शुल्क समाप्त करने पर सहमत हो गया है, वहीं भारत 200 टन तक सोने के आयात पर शुल्क में छूट देगा।

ई-व्हीकल्स का बढ़ा क्रेज, नौ बड़े शहरों में ईवी चार्जिंग स्टेशनों की संख्या केवल चार महीने में ढाई गुना बढ़ी

नई दिल्ली।

इलेक्ट्रिक व्हीकल की बढ़ती स्वीकार्यता और लोकप्रियता के बीच देश में ईवी चार्जिंग स्टेशनों का इन्फ्रास्ट्रक्चर तेजी से विकास कर रहा है। देश के नौ बड़े शहरों में इलेक्ट्रिक वाहनों के चार्जिंग स्टेशनों की संख्या पिछले चार महीनों में ही ढाई गुना तक बढ़ चुकी है। ऊर्जा मंत्रालय ने शनिवार को एक बयान में कहा कि दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता समेत नौ प्रमुख शहरों में ईवी चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बीते चार महीनों में तेजी से बढ़ी है। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की सरकारी नीति के तहत बड़े शहरों में ईवी चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बढ़ाने की कोशिश जारी है। इस बयान के मुताबिक, अक्टूबर 2021 से लेकर जनवरी 2022 के बीच इन नौ शहरों में 678 अतिरिक्त चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए गए हैं। इस तरह इन शहरों में मौजूद सार्वजनिक ईवी स्टेशनों की संख्या बढ़कर 940 हो गई है। देश भर में अब इनकी संख्या करीब 1,640 हो चुकी है। सरकार ने शुरुआती दौर में 40 लाख से अधिक आबादी वाले बड़े शहरों में इलेक्ट्रिक वाहनों पर प्रोत्साहन देने की नीति अपनाई हुई है। इसी क्रम में बड़े शहरों में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए ढांचागत आधार तैयार करने के लिए चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बढ़ाई जा रही है। ऊर्जा मंत्रालय ने गत 14 जनवरी को ईवी चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना से जुड़े दिशानिर्देश एवं संशोधित मानक जारी किए थे। इससे ईवी ढांचा खड़ा करने से जुड़ी स्थिति स्पष्ट होने की संभावना है। सरकार ने ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के प्रयास में ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी, एनर्जी एफिशिएंसी सर्विस लिमिटेड, पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन लिमिटेड और जैसी सार्वजनिक इकाइयों के अलावा निजी कंपनियों को भी अपने साथ जोड़ा है। इससे अधिक बड़े इलाके में ईवी ढांचागत आधार तैयार करने में मदद मिलेगी और वाहन उपभोक्ता इलेक्ट्रिक वाहनों के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित होंगे।इससे अधिक बड़े इलाके में ईवी ढांचागत आधार तैयार करने में मदद मिलेगी और वाहन उपभोक्ता इलेक्ट्रिक वाहनों के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित होंगे।

विदेशी मुद्रा भंडार में आई गिरावट, गोल्ड रिजर्व में हुआ इजाफा

नई दिल्ली। देश के विदेशी मुद्रा भंडार में फिर कमी आई है। 11 फरवरी, 2022 को खत्म हुए सप्ताह में यह 1.763 अरब डॉलर घटकर 630.19 अरब डॉलर रह गया। इस दौरान गोल्ड रिजर्व का मूल्य 95.20 करोड़ डॉलर बढ़कर 40.235 अरब डॉलर हो गया। भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई की ओर से शुक्रवार को जारी आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है । इससे पहले 4 फरवरी, 2022 को खत्म हुए सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 2.198 अरब डॉलर बढ़कर 631.953 अरब डॉलर रह गया था। आरबीआई के आंकड़ों के मुताबिक, 28 जनवरी को खत्म हुए पिछले सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 4.531 अरब डॉलर घटकर 629.755 अरब डॉलर हो गया था जबकि 21 जनवरी को खत्म हुए सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 67.8 करोड़ डॉलर घटकर 634.287 अरब डॉलर रह गया था। आरबीआई के शुक्रवार को जारी साप्ताहिक आंकड़ों के अनुसार 11 फरवरी को खत्म हुए सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार में यह गिरावट मुख्य रूप से फॉरेन करेंसी एसेट यानी एफसीए में आई कमी की वजह से हुई जो कुल मुद्रा भंडार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। रिजर्व बैंक ने कहा कि रिपोर्टिंग वीक में भारत की एफसीए (स्रष्ट) 2.764 अरब डॉलर घटकर 565.565 अरब डॉलर हो गई। डॉलर में बताई जाने वाली एफसीए में विदेशी मुद्रा भंडार में रखी यूरो, पाउंड और येन जैसी दूसरी विदेशी मुद्राओं के मूल्य में वृद्धि या कमी का प्रभाव भी शामिल होता है। इसके अलावा रिपोर्टिंग वीक में गोल्ड रिजर्व का मूल्य 95.20 करोड़ डॉलर बढ़कर 40.235 अरब में देश का एसडीआर यानी स्पेशल ड्राइंग राइट 6.5 करोड़ डॉलर बढ़कर 19.173 अरब डॉलर हो गया।

सरकार फसल बीमा के लिए घर-घर वितरण अभियान शुरू करेगी

नई दिल्ली ।

सरकार ने शुक्रवार को कहा कि किसानों को फसल बीमा पॉलिसी देने के लिए वह घर-घर वितरण अभियान शुरू करेगी। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) के आगामी खरीफ सत्र मे कार्यान्वयन के सातवें साल में प्रवेश के साथ योजना शुरू की जा रही है। कृषि मंत्रालय ने कहा कि घर-घर चलाया जाने वाला अभियान मेरी पॉलिसी मेरे हाथ का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी किसान पीएमएफबीवाई के तहत सरकार की नीतियों, भूमि रिकॉर्ड, दावे की प्रक्रिया और शिकायत निवारण के बारे में सभी जानकारी से अच्छी तरह से वाकिफ हों। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि जून से शुरू होने वाले आगामी खरीफ सत्र में योजना लागू करने करने वाले सभी राज्यों में घर-घर जाकर अभियान शुरू किया जाएगा। फरवरी 2016 में शुरू की गई पीएमएफबीवाई का उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली फसल के नुकसान/क्षति से पीड़ित किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। मंत्रालय के अनुसार, पीएमएफबीवाई के तहत 36 करोड़ से अधिक किसानों के आवेदनों का बीमा किया गया है, इस साल 4 फरवरी तक इस योजना के तहत 1,07,059 करोड़ रुपये से अधिक दावों का भुगतान किया जा चुका है। फसल बीमा योजना सबसे कमजोर किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने में कामयाब रही है ।

क्योंकि इस योजना में नामांकित लगभग 85 प्रतिशत किसान छोटे और सीमांत किसान हैं। हालांकि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को वर्ष 2020 में किसानों की स्वैच्छिक भागीदारी के लिहाज से बदला गया था। किसान को किसी भी घटना के 72 घंटे के भीतर फसल के नुकसान की सूचना फसल बीमा ऐप, सीएससी केंद्र या निकटतम कृषि अधिकारी के माध्यम से देने के लिए सुविधाजनक बनाया गया है। पात्र किसान के बैंक खातों में इलेक्ट्रॉनिक रूप से दावे का भुगतान करने की व्यवस्था की गई है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने 2022-23 के बजट भाषण में फसल बीमा के लिए ड्रोन के उपयोग का प्रस्ताव किया है। इससे जमीन पर योजना के सुचारू कार्यान्वयन के लिए ।

अगले दो वर्षों में टियर-2 एवं टियर-3 शहर करेंगे वृद्धि की अगुआई: सुंदरम होम फाइनेंस

चेन्नई । सुंदरम होम फाइनेंस के प्रबंध निदेशक डी लक्ष्मीनारायणन ने कहा है कि अगले कुछ वर्षों में टियर-2 और टियर-3 शहर वृद्धि की अगुआई करेंगे और इसे ध्यान में रखते हुए कंपनी ने दक्षिण भारतीय बाजार में 200 लोगों की भर्ती करने की योजना बनाई है। लक्ष्मीनारायणन ने कहा कि कंपनी रियल एस्टेट क्षेत्र में लंबी अवधि की संभावनाओं को लेकर उत्साहित है। उन्होंने पीटीआई-भाषा से बातचीत में कहा, ''आवास बाजार इस साल लचीला बना रहेगा और बढ़ेगा, जिसे वास्तविक ग्राहकों की मांग और छोटे शहरों की वृद्धि से मजबूती मिलेगी। 2022 में आवास की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और यह महामारी से पहले के स्तर पर वापस आ जाएगी।'' उन्होंने कहा कि कंपनी ने पिछले छह महीनों में मासिक आधार पर लगातार वृद्धि दर्ज की है। कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर के बाद आवास बाजार में तेजी आई है और खरीदार कई विकल्प तलाश रहे हैं। लक्ष्मीनारायणन ने कहा कि खरीदारों में नया विश्वास जगा है और बाजार में तेजी का अंदाजा नई परियोजनाओं की संख्या से लगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी के बाद लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता संबंधी चिंताओं के चलते घनी आबादी वाले शहरों से दूर बड़े घरों में दिलचस्पी ले रहे हैं। उन्होंने कहा, ''हमें उम्मीद है कि टियर-2 और टियर-3 शहरों में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी। चालू वित्तीय वर्ष के पहले नौ महीनों में हमारे लगभग 70 प्रतिशत वितरण इन्हीं स्थानों में हुए हैं।''

डेलरे बीच टूर्नामेंट : कैमरन नोरी सेमीफाइनल में, शीर्ष वरीय दिमित्रोव बाहर

डेलरे बीच । शीर्ष वरीय कैमरन नोरी ने शुक्रवार को यहां पांचवें वरीय सबेस्टियन कोर्डा को हराकर डेलरे बीच टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनाई। नोरी ने क्वार्टर फाइनल मुकाबले में 6-2, 1-6, 7-6 (4) से जीत दर्ज की। कोर्डा ने निर्णायक टाईब्रेकर में शुरुआती दो अंक जीते और फिर अगले सात में से 6 गंवा दिए जिससे वह नहीं उबर पाए। पिछले साल वह फाइनल में पहुंचे थे। सेमीफाइनल में नोरी का सामना चौथे वरीय टॉमी पॉल से होगा जिन्होंने स्टीफन कोजलोव को 6-3, 6-1 से हराया। दूसरे वरीय और 2020 के चैंपियन रिली ओपेलका ने भी एड्रियन मनारिनो को 7-6 (2), 3-6, 6-1 से हराकर सेमीफाइनल में जहां बनाई जहां उनका सामना गैरवरीय जॉन मिलमैन से होगा। मिलमैन ने तीसरे वरीय ग्रिगोर दिमित्रोव को हराकर उलटफेर किया।सेमीफाइनल में जहां बनाई जहां उनका सामना गैरवरीय जॉन मिलमैन से होगा। मिलमैन ने तीसरे वरीय ग्रिगोर दिमित्रोव को हराकर उलटफेर किया।

तीसरे टी20 मैच में बड़े बदलाव कर सकती है टीम इंडिया, इन्हें मिल सकता है मौका

कोलकाता ।

श्रृंखला में पहले ही विजयी बढ़त बना चुकी भारतीय टीम रविवार को यहां वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे और अंतिम टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में प्रयोग करने के इरादे से उतरेगी। विराट कोहली और ऋषभ पंत को 10 दिन का ब्रेक दिया गया है जिससे भारत के लिए श्रेयस अय्यर और रुतुराज गायकवाड़ को अंतिम एकादश में शामिल करने का मौका होगा। भारत ने शुक्रवार को यहां दूसरे टी20 में वेस्टइंडीज को 8 रन से हराकर रोहित शर्मा की अगुआई में लगातार तीसरी श्रृंखला जीती। आस्ट्रेलिया में होने वाले टी20 विश्व में अब 8 महीने से भी कम का समय बचा है और ऐसे में रोहित नए विकल्पों को आजमाने की कोशिश करेंगे और इसकी शुरुआत रिजर्व सलामी बल्लेबाज की तलाश से हो सकती है। लोकेश राहुल की गैरमौजूदगी में इशान किशन शीर्ष क्रम में प्रभावित करने में नाकाम रहे हैं और उनकी जगह प्रतिभावान गायकवाड़ को मौका मिल सकता है जो अब तक बाहर बैठे रहे हैं। आईपीएल 2022 की मेगा नीलामी में सबसे महंगा खिलाड़ी बनने के बाद टी20 श्रृंखला खेल रहे इशान ने अब तक निराश किया है। उन्हें मुंबई इंडियंस ने 15 करोड़ 25 लाख रुपए में खरीदा। पहले मैच में 42 गेंद में 35 रन बनाने के बाद इशान दूसरे मैच में 10 गेंद में सिर्फ दो रन बना सके। अब यह देखना होगा कि रोहित मुंबई इंडियंस टीम के अपने इस साथी को एक और मौका देते हैं या नहीं। वेस्टइंडीज के खिलाफ श्रृंखला के बाद भारत को श्रीलंका के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला खेलनी है और ऐसे में इशान को कुछ और मौके देना बुरा विचार नहीं होगा। मध्यक्रम में श्रेयस कोहली की जगह लेंगे जिन्हें 100वें टेस्ट से पहले जरूरी आराम दिया गया है। पूर्व भारतीय कप्तान कोहली श्रीलंका के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में भी नहीं खेलेंगे और इस टीम के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के लिए वापसी करेंगे। आईपीएल नीलामी में तीसरे सबसे महंगे खिलाड़ी अय्यर वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले दो मैच में भारत के टी20 संयोजन में फिट नहीं बैठे लेकिन अंतिम मैच में उनका चुना जाना लगभग तय है। टी20 श्रृंखला से पहले हुई वनडे श्रृंखला में दीपक हुड्डा ने पदार्पण करते हुए प्रभावित किया और देखना होगा कि बड़े शॉट खेलने में सक्षम इस आलराउंडर को टी20 अंतरराष्ट्रीय में आजमाया जाता है या नहीं। जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी की गैरमौजूदगी में भारत ने अब तक भुवनेश्वर कुमार और हर्षल पटेल को उतारा है। दोनों ने अब तक नतीजे दिए हैं विशेषकर दूसरे मैच में जहां भुवनेश्वर ने 19वें ओवर में मैच का रुख बदल दिया और फिर हर्षल ने अंतिम ओवर में 25 रन का बचाव करते हुए भारत को जीत दिला दी। यह देखना होगा कि रोहित गेंदबाजी संयोजन में बदलाव करते हुए मोहम्मद सिराज को मौका देते हैं या नहीं। पदार्पण का इंतजार कर रहे आवेश आईपीएल नीलामी के (जिसने अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं खेला हो) खिलाड़ी बने थे ।

डब्ल्यूटीसी रैंकिंग में श्रीलंका टॉप पर काबिज, भारत पहुंचा इस स्थान पर

दुबई ।

भारत अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) द्वारा शनिवार को जारी नवीनतम विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) तालिका में पांचवें स्थान पर बना हुआ है। डब्ल्यूटीसी के पहले सत्र का उप विजेता भारत दूसरे चक्र में 49.07 प्रतिशत अंक जीतकर अभी पांचवें स्थान पर चल रहा है। भारत ने डब्ल्यूटीसी के दूसरे चक्र में अब तक 9 टेस्ट खेले हैं जिसमें से चार में उसने जीत दर्ज की जबकि तीन में उसे हार का सामना करना पड़ा। दो मैच ड्रॉ रहे। सभी टीम के बीच भारत ने अधिकतम 53 अंक जुटाए हैं। भारत को अगले महीने अपने स्थान में सुधार करने का मौका मिलेगा जब टीम दो टेस्ट की श्रृंखला के लिए श्रीलंका की मेजबानी करेगी। श्रीलंका की टीम शत प्रतिशत अंक जीतकर तालिका में शीर्ष पर चल रही है। टीम ने मौजूदा चक्र के अपने दोनों टेस्ट जीते हैं। इसके बाद आस्ट्रेलिया का नंबर आता है जिसके 86.66 प्रतिशत अंक हैं। पाकिस्तान 75 प्रतिशत अंक के साथ तीसरे जबकि दक्षिण अफ्रीका 50 प्रतिशत अंक के साथ चौथे स्थान पर है। शनिवार को क्राइस्टचर्च में पहले टेस्ट में दक्षिण अफ्रीका को पारी और 276 रन से हराने वाले गत चैंपियन न्यूजीलैंड ने 12 अंक हासिल किए और टीम 46.66 प्रतिशत अंक के साथ छठे स्थान पर है।

हिकारु नाकामुरा बने फीडे ग्रां प्री शतरंज 2022 के पहले विजेता

जर्मनी । फीडे ग्रां प्री सीरीज के पहले पड़ाव बर्लिन ग्रां प्री के फाइनल मे हमवतन लेवोन अरोनियन को टाईब्रेक मुक़ाबले मे 2-0 से मात देकर यूएसए के हिकारु नाकामुरा विजेता बन गए है । इसके साथ ही फीडे कैंडीडेट के बचे हुए दो स्थानो मे उन्होने अपना मजबूत दावा पेश कर दिया है । नाकामुरा और अरोनियन के बीच फाइनल में खेले गए दोनों क्लासिकल मुक़ाबले बराबरी पर समाप्त हुए थे और इसके बाद दोनों के बीच दो रैपिड टाईब्रेक के मुक़ाबले खेले गए । सबसे पहले मुक़ाबले में सफ़ेद मोहरो से खेलते हुए नाकामुरा नें राय लोपेज ओपनिंग में 61 चालों तक चले हाथी के एंडगेम में अरोनियन को हराया और 1-0 से आगे हो गए । फिर दूसरे मुक़ाबले में उन्होने काले मोहरो से हंगरियन डिफेंस में करो या मरो की स्थिति में फसे अरोनियन को 51 चालों में पराजित करते हुए 2-0 के स्कोर से अपना पहला फीडे ग्रां प्री खिताब हासिल कर लिया । इस जीत के बाद नाकामुरा को 24000 यूरो और कुल 13 ग्रां प्री अंक मिले जबकि अरोनियन को 18000 यूरो और कुल 10 ग्रां प्री अंक हासिल हुए ।

ऋषभ पंत ने की वेंकटेश अय्यर की तारीफ, कहा- मैच में हमने बनाया था प्लान

कोलकाता ।

भारत ने शुक्रवार को ईडन गार्डन्स में खेले गए सीरीज के दूसरे टी20 मैच में वेस्टइंडीज को 8 रन से हरा दिया। पंत (52) और वेंकटेश अय्यर (33) ने दूसरे टी20 में 20 ओवरों में भारत को 186/5 रन बनाने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण पारियां खेली थीं। भारत के विकेटकीपर ऋषभ पंत ने वेंकटेश अय्यर की तारीफ करते हुए कहा कि वह एक परिपक्व क्रिकेटर हैं जो स्थिति को अच्छी तरह से समझते हैं। ऋषभ पंत ने कहा कि जब आप निचल क्रम पर बल्लेबाजी के लिए आते हैं तो आप स्थिति को जानते हैं। वेंकटेश अय्यर स्थिति को वास्तव में अच्छी तरह से समझता है। हमने इसे सरल रखने और बहुत सी चीजों को आजमाने की बात नहीं की। हमारा प्लान आसान था। गेंद को देखो और हिट करो। ऋषभ पंत ने आगे कहा कि वेंकटेश अय्यर मध्य प्रदेश के लिए निचले क्रम पर बल्लेबाजी के लिए आते हैं। हां, आईपीएल में वह ओपनिंग कर रहे हैं, लेकिन हम इस बारे में ज्यादा नहीं सोच सकते। भारतीय टीम में हम अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग स्थान खोजने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी को मौका देने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जहां हम उन्हें टीम के लिए फिट देखते हैं। पंत ने कहा कि विश्व कप के लिए अभी भी समय है। इसलिए योजना अधिक से अधिक विकल्पों को आजमाने और अधिक से अधिक स्थान बनाने की है। इसलिए हम बहुत सारे विकल्पों की कोशिश कर रहे हैं। पर फैसला किया जाएगा। इसलिए हम बहुत सारे विकल्पों की कोशिश कर रहे हैं। जो टीम के लिए सही लगता है उस पर फैसला किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

रोवमैन पावेल बोले- हम हर सीरीज के साथ सुधार कर रहे हैं

कोलकाता । वेस्टइंडीज के मध्य क्रम के आक्रामक बल्लेबाज रोवमैन पावेल ने कहा है कि विश्व कप से पहले प्रत्येक श्रृंखला के साथ उनकी टीम में सुधार हो रहा है और भारत के खिलाफ मौजूदा टी20 श्रृंखला इसका साक्ष्य है। वेस्टइंडीज की टीम शुक्रवार को दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय में भारत के 187 रन के लक्ष्य को हासिल करने के करीब पहुंच गई थी लेकिन अंत में आठ रन से शिकस्त के साथ उसने श्रृंखला गंवा दी। पावेल ने मैच के बाद कहा कि अगर आप पिछली श्रृंखला और इस श्रृंखला को देखो तो हम काफी क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जिसमें खिलाड़ियों ने सुधार किया है। हम धीरे धीरे विश्व कप के लिए तैयार हो रहे हैं और यह महत्वपूर्ण है कि हम प्रत्येक श्रृंखला के साथ सुधार करते रहें। पावेल ने 36 गेंद में 68 रन की नाबाद तूफानी पारी खेली और विकेटकीपर बल्लेबाज निकोलस पूरन (62) के साथ 60 गेंद में 100 रन की साझेदारी की। ये दोनों हालांकि टीम को लक्ष्य तक नहीं पहुंचा पाए। भुवनेश्वर कुमार की अगुआई में भारतीय गेंदबाजों ने अंतिम दो ओवर में शानदार गेंदबाजी करके टीम को जीत दिला दी। वेस्टइंडीज ने पिछली टी20 श्रृंखला में स्वदेश में इंग्लैंड को 3-2 से हराया था लेकिन भारत के खिलाफ वनडे श्रृंखला में उसे 0-3 से शिकस्त झेलनी पड़ी। पावेल ने कहा कि हमने साझेदारियां बनाई और अगर हम ऐसा करना जारी रखते हैं तो हम अधिक मैच जीतेंगे और कम मैच हारेंगे। अगर आप वेस्टइंडीज टी20 क्रिकेट को देख रहे हैं जो खिलाड़ियों में धीरे धीरे सुधार हो रहा है। भारत के खिलाफ हार के लिए खराब क्षेत्ररक्षण को जिम्मेदार ठहराते हुए पावेल ने कहा कि वे 10 से 15 रन बचा सकते थे।

पुजारा खाता खोलने में नाकाम, सौराष्ट्र फॉलोआन को मजबूर

अहमदाबाद । श्रीलंका के खिलाफ आगामी टेस्ट श्रृंखला के लिए भारतीय टीम से बाहर किए गए चेतेश्वर पुजारा की खराब फॉर्म शनिवार को भी जारी रही जब मुंबई के खिलाफ रणजी ट्राफी ग्रुप डी मैच में वह खाता खोलने में भी नाकाम रहे जबकि उनकी टीम सौराष्ट्र को भी फॉलोआन के लिए मजबूर होना पड़ा। बाएं हाथ के स्पिनर शम्स मुलानी (55 रन पर चार विकेट) और तेज गेंदबाज मोहित अवस्थी (56 रन पर चार विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने सौराष्ट्र की टीम तीसरे दिन पहली पारी में सिर्फ 220 रन पर ढेर हो गई। टीम ने दिन की शुरुआत बिना विकेट खोए 18 रन से की। मुलानी और अवस्थी ने सौराष्ट्र को लगातार झटके दिए। टीम ने पुजारा सहित पांच विकेट 76 रन तक ही गंवा दिए थे। पुजारा को चौथी गेंद पर अवस्थी ने पगबाधा किया। पुजारा और इस मैच में मुंबई का प्रतिनिधित्व कर रहे अजिंक्य रहाणे को पिछले काफी समय से खराब फॉर्म से जूझने के कारण श्रीलंका के टेस्ट श्रृंखला के लिए भारतीय टीम से बाहर कर दिया गया है और चयनकर्ताओं ने उन्हें रणजी ट्रॉफी में खेलकर फॉर्म में वापसी करने को कहा है। रहाणे ने पहली पारी में 129 रन बनाए थे। अनुभवी शेल्डन जैकसन (61) और चिराग जानी (40) ने उपयोगी पारियां खेली।

रणजी ट्रॉफी : चेतेश्वर पुजारा 0 पर आऊट, सौराष्ट्र फॉलोआन को मजबूर

अहमदाबाद ।

श्रीलंका के खिलाफ आगामी टेस्ट श्रृंखला के लिए भारतीय टीम से बाहर किए गए चेतेश्वर पुजारा की खराब फॉर्म शनिवार को भी जारी रही जब मुंबई के खिलाफ रणजी ट्राफी ग्रुप डी मैच में वह खाता खोलने में भी नाकाम रहे जबकि उनकी टीम सौराष्ट्र को भी फॉलोआन के लिए मजबूर होना पड़ा। बाएं हाथ के स्पिनर शम्स मुलानी (55 रन पर चार विकेट) और तेज गेंदबाज मोहित अवस्थी (56 रन पर चार विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने सौराष्ट्र की टीम तीसरे दिन पहली पारी में सिर्फ 220 रन पर ढेर हो गई। टीम ने दिन की शुरुआत बिना विकेट खोए 18 रन से की। मुलानी और अवस्थी ने सौराष्ट्र को लगातार झटके दिए। टीम ने पुजारा सहित पांच विकेट 76 रन तक ही गंवा दिए थे। पुजारा को चौथी गेंद पर अवस्थी ने पगबाधा किया। पुजारा और इस मैच में मुंबई का प्रतिनिधित्व कर रहे अजिंक्य रहाणे को पिछले काफी समय से खराब फॉर्म से जूझने के कारण श्रीलंका के टेस्ट श्रृंखला के लिए भारतीय टीम से बाहर कर दिया गया है और चयनकर्ताओं ने उन्हें रणजी ट्रॉफी में खेलकर फॉर्म में वापसी करने को कहा है। रहाणे ने पहली पारी में 129 रन बनाए थे। अनुभवी शेल्डन जैकसन (61) और चिराग जानी (40) ने उपयोगी पारियां खेली। जैकसन ने प्रेरक मांकड़ (28) के साथ छठे विकेट के लिए 55 और चिराग के साथ सातवें विकेट के लिए 72 रन की साझेदारी की। टीम ने हालांकि अपने अंतिम चार विकेट सिर्फ 17 रन पर गंवा दिए और पूरी टीम 220 रन पर सिमट गई। तनुष कोटियान ने भी 23 रन देकर दो विकेट चटकाए। पहली पारी सात विकेट पर 544 रन बनाकर घोषित करने वाले मुंबई ने 324 रन की बढ़त हासिल करने के बाद सौराष्ट्र को फालोआन दिया। सौराष्ट्र ने हालांकि दूसरी पारी में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सलामी बल्लेबाजों स्नेल पटेल (नाबाद 64) और हार्विक देसाई (नाबाद 39) की पारियों की बदौलत बिना विकेट खोए 105 रन बनाए। सौराष्ट्र की टीम अब भी 219 रन से पिछड़ रही है। ग्रुप के एक अन्य मैच में कप्तान स्नेहल कौथांकर (नाबाद 165) के नाबाद शतक और एकनाथ केरकर (नाबाद 50) के साथ छठे विकेट की उनकी 133 रन की अटूट साझेदारी की बदौलत गोवा ने दूसरी पारी 5 विकेट पर 394 रन बनाकर घोषित की और ओडिशा को 387 रन का लक्ष्य दिया। ओडिशा ने दिन का खेल खत्म होने तक बिना विकेट खोए 22 रन बना लिए हैं। अनुराग सारंगी 10 जबकि शांतनु मिश्रा छह रन बनाकर खेल रहे हैं। ओडिशा को जीत के लिए 365 रन की दरकार है।

लॉकडाउन में साथ समय बिताने से ओलंपिक के लिए तैयार होने में मदद मिली: हरमनप्रीत

नई दिल्ली ।

डिफेंडर हरमनप्रीत सिंह ने कहा कि कोरोना वायरस के कारण लागू लॉकडाउन के दौरान साथ में समय बिताने से सामूहिक मानसिकता तैयार हुई जिससे भारतीय पुरुष हॉकी टीम को तोक्यो ओलंपिक में मुश्किल चुनौती से पार पाने में मदद मिली। हाल के वर्षों में भारतीय टीम के शानदार प्रदर्शन में हरमनप्रीत की भी अहम भूमिका रही है। तोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के दौरान शानदार प्रदर्शन करने वाले हरमनप्रीत को एफआईएच का 2021 का सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी चुना गया। हॉकी इंडिया के पोडकास्ट 'हॉकी ते चर्चा में हरमनप्रीत ने तोक्यो ओलंपिक में टीम की सफलता पर बात की। हरमनप्रीत ने कहा कि पिछले साल ओलंपिक से पहले लॉकडाउन के दौरान हमारी टीम ने काफी समय एक साथ बिताया। यह मुश्किल स्थिति थी क्योंकि हम लॉकडाउन के शुरुआती हफ्तों में घर नहीं जा पाए लेकिन उस मुश्किल समय का एक साथ सामना करने से हमें पिछले साल ओलंपिक की चुनौतियों के लिए तैयार होने में मदद मिली। उन्होंने कहा कि कांस्य पदक के मुकाबले में जर्मनी जैसी टीम के खिलाफ 1-3 से पिछड़ने के बाद यह मुश्किल हालात में हमारी सामूहिक मानसिकता थी जिससे हम अंततः जीत दर्ज कर पाए। वर्ष 2015 में पदार्पण के बाद से इस 26 साल के खिलाड़ी का दर्जा टीम में लगातार बढ़ा है और टीम का उप कप्तान बनाए जाने के संदर्भ में उन्होंने कहा कि वह अतिरिक्त जिम्मेदारी का लुत्फ उठाते हैं।

उन्होंने कहा कि कभी अतिरिक्त दबाव महसूस नहीं हुआ क्योंकि टीम में सभी एक दूसरे के साथ खुलकर बात करते हैं। बेशक मनप्रीत और श्री भाई (पीआर श्रीजेश) जैसे अन्य सीनियर खिलाड़ी ट्रेनिंग और मैच स्थिति के दौरान टीम का मार्गदर्शन करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी लेते हैं इसलिए यह पूरी टीम का सामूहिक प्रयास है।

रोहित शर्मा बने भारत के नए टेस्ट कप्तान, पुजारा-रहाणे का पत्ता कटा

स्पोर्ट्स डेस्क । भारतीय क्रिकेट बोर्ड यानि कि बीसीसीआई ने टेस्ट टीम के नए कप्तान का ऐलान कर दिया है। भारतीय टेस्ट टीम के नए कप्तान सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा होंगे। इसकी ऐलान मुख्य चयनकर्ता ने चेतन शर्मा ने किया। चेतन शर्मा ने रोहित शर्मा को तीनों फॉर्मेट का कप्तान बनाने के साथ ही श्रीलंका खिलाफ सीरीज के लिए टीम का ऐलान भी कर दिया है। श्रीलंका खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए खराब फॉर्म से गुजर रहे अजिंक्य रहाणे और चेतेश्वर पुजारा को बाहर का रास्ता दिखा दिया है। दोनों ही बल्लेबाजों को घरेलू क्रिकेट खेलने की सलाह दी गई है। वहीं टी20 सीरीज के लिए विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन को मौका दिया गया है। भारतीय टेस्ट टीम । रोहित शर्मा (कप्तान), मयंक अग्रवाल, प्रियांक पांचाल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, हनुमा विहारी, शुभमन गिल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), केएस भरत (विकेटकीपर), रविंद्र जडेजा, जयंत यादव, कुलदीप यादव, जसप्रीत (उपकप्तान), मोहम्मद शमी, मोहम्मद सिराज, उमेश यादव, सौरव कुमार।

आईपीएल ऑक्शन में 7.50 करोड़ में बिकने वाले मार्क वुड बोले- यह सच नहीं लगता

लंदन ।

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की नीलामी में फ्रेंचाइजी से जुड़ने में सफल रहे इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड ने कहा कि अनुबंध मिलना 'फुटबॉल मैनेजर जैसा कंप्यूटर गेम खेलने की तरह है जो 'लगभग वास्तविक नहीं है। वुड को नई फ्रेंचाइजी लखनऊ सुपर जाइंट्स ने पिछले हफ्ते आईपीएल नीलामी के पहले दिन साढ़े सात करोड़ रुपए में खरीदा। वुड ने कहा कि जब अंतिम राशि की पुष्टि हुई तो सारा ने पूछा कि यह पाउंड में कितनी राशि होगी- मुझे सभी खाते फ्रीज करने पड़ सकते हैं जिससे कि यह राशि गायब नहीं हो जाए। लेकिन हम खुश थे। यह काफी अजीब अनुभव था। यह कंप्यूटर गेम की तरह महसूस होता है। यह वास्तविक नहीं लगता, जैसे फुटबॉल मैनेजर में ट्रांस्फर होते हैं लेकिन जब अनुबंध मिलता है तो यह काफी वास्तविक भी होता है। परिवार के साथ अधिक समय बिताने के लिए पिछले साल ही नीलामी से हटने वाले 32 साल के वुड ने नीलामी के दौरान अपने घर के माहौल को याद किया। वुड ने कहा कि हम शादी की सालगिरह के लिए सप्ताहांत बाहर जाने वाले थे जिसमें मैं आस्ट्रेलिया में होने के कारण हिस्सा नहीं ले पाया था लेकिन मंच पर आईपीएल की नीलामी करने वाले के बीमार होकर गिरने के कारण सब कुछ रुक गया और हमारे जाने के कार्यक्रम में विलंब हुआ। नीलामीकर्ता ह्यूज एडमीड्स रक्तचाप में गिरावट के कारण पहले दिन नीलामी के दौरान बेहोश होकर गिर गए थे। अनुभवी तेज गेंदबाजों जेम्स एंडरसन और स्टुअर्ट ब्रॉड को अगले महीने वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली तीन टेस्ट की श्रृंखला के लिए इंग्लैंड की टीम से बाहर कर दिया गया है ।

रोनाल्डो की पार्टनर जॉर्जिना रोड्रिगेज ने दिखाई अपनी ज्वैलरी कलैक्शन, कीमत है 27 करोड़ से पार

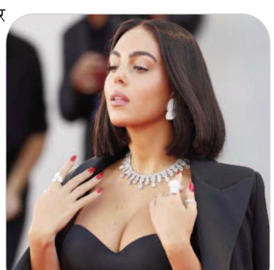

खेल डैस्क । फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो की पार्टनर जॉर्जिना रोड्रिगेज ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट डालकर अपने फैंस को अपनी महंगी ज्यूलरी दिखाई है। बताया जाता है कि जॉर्जिना के पास बेशकीमती ज्यूलरी है जोकि करीब 26 करोड़ की है। जॉर्जिना ने बीते दिनों अपने जन्मदिन पर आई एम जॉर्जिना नामक डॉक्यूमेंट्री रिलीज की थी जिसमें फैंस ने जॉर्जिना की लग्जरी लाइफ और शुरूआती संघर्ष की झलक देखने को मिली है। बीते दिनों रोनाल्डो फ्रैंक मुलर वॉच पहने दिखे थे जिसकी कीमत 12 लाख पौंड (करीब 12.23 करोड़ रुपए) हैं। रोनाल्डो की सगाई की अंगूठियों की कीमत 6 लाख पौंड (करीब 6.11 करोड़ रुपए) है। 28 साल की जॉर्जिना सोशल मीडिया पर अक्सर अपने आभूषणों की चमक बिखेरती रहती हैं। बताते हैं कि नेटफिल्क्स के शो के प्रोमो में उन्होंने डायमंड का एक सेट पहना था जिसमें हार, ड्रॉप इयररिंग्स और अंगूठी शामिल थी। बताया जाता है कि इसकी कीमत 2.7 लाख पौंड (करीब 27.52 करोड़ रुपए) थी।

गुजरात में कोरोना के दैनिक केसों की संख्या 500 के नीचे, 1419 डिस्चार्ज, 13 मौतें

अहमदाबाद।

गुजरात में कोरोना के मामलों में लगातार कमी आ रही है। शनिवार को राज्य में कोरोना के दैनिक मामलों की संख्या 486 दर्ज हुई। जबकि 1419 लोगों को ठीक होने के बाद डिस्चार्ज किया गया। वहीं 13 मरीजों की कोरोना से मौत हो गई। वहीं आज 1.60 लाख से अधिक नागरिकों को टीकाकरण किया गया। गुजरात में कोरोना के सक्रिय मरीजों की संख्या घटकर 5790 रह गई है। जिसमें 42 वेन्टीलेटर पर हैं और 5748 लोग वेन्टीलेटर पर हैं। राज्य में अब तक कुल 1203508 नागरिक कोरोना को मात देकर स्वस्थ हो चुके हैं। जबकि 10887 लोगों की कोरोना से मौत हो चुकी है। शनिवार को गुजरात में 13 मरीजों की मौत हुई है। जिसमें वडोदरा शहर-जिले में सबसे अधिक 5 मरीजों की मौत हुई। जबकि भरुच में 2, पंचमहल में 2, राजकोट शहर-जिले में 2, अहमदाबाद कॉर्पोरेशन, वडोदरा, मेहसाणा में 1-1 मरीज की मौत हुई। पिछले 24 घंटों में अहमदाबाद कॉर्पोरेशन में सबसे अधिक 192 संक्रमित मरीज सामने आए। वहीं वडोदरा कॉर्पोरेशन में 62, वडोदरा में 39, सूरत कर्पोरेशन में 21, बनासकांठा में 20, आणंद, मेहसाणा और राजकोट कॉर्पोरेशन में 12-12, सूरत में 11, गांधीनगर कॉर्पोरेशन में 10, देवभूमि द्वारका, पाटन और राजकोट में 8-8, गांधीनगर में ।, छोटाउदेपुर, खेडा, मोरबी में 6-6, अहमदाबाद, साबरकांठा, तापी में 5-5, अमरेली, अरवल्ली, भरुच, नवसारी में 4-4, कच्छ में 3, दाहोद, जामनगर, जामनगर कॉर्पोरेशन, वलसाड में 2-2, भावनगर कॉर्पोरेशन, गिर सोमनाथ, नर्मदा, और पंचमहल में 1-1 समेत राज्य में कुल 486 कोरोना के मामले दर्ज हुए। जबकि एक महानगर और । जिलों में कोरोना का एक भी मरीज नहीं मिला। शनिवार को राज्य में 160094 नागरिकों को वैक्सीनेशन किया गया। जिसमें 20 हेल्थ केयर वर्कर और फ्रंट लाइन वर्कर को पहला और 24 को दूसरा डोज दिया गया। 45 वर्ष से अधिक आयु के 2187 को कोरोना का पहला और 12420 को दूसरा टीका लगाया गया। 18 से 45 वर्ष आयु वर्ग के 110।6 को पहला और 4930। को कोरोना का दूसरा डोज दिया गया। 15 से 18 वर्षीय 13591 किशोरों को पहली और 52835 को कोविड की दूसरी वैक्सीन लगाई गई। जबकि 18634 नागरिकों को प्रॉकोशन डोज दिया गया। राज्य में अब तक 102084403 नागरिकों को वैक्सीनेट किया जा चुका है।

अदालत के फैसले के बाद एक बार फिर चर्चा में आया आजमगढ़

अहमदाबाद । अहमदाबाद बम धमाकों के मामले में निचली अदालत के शुक्रवार के फैसले के बाद आजमगढ़ एक बार फिर चर्चा में है। जुलाई 2008 में अहमदाबाद में हुए बम धमाकों में 56 लोगों के मारे जाने की घटना में आजमगढ़ जिले के निवासी पांच अभियुक्तों को वहां की एक विशेष अदालत ने शुक्रवार को मृत्युदंड और एक को ताउम्र कैद की सजा सुनाई है। इनमें से दो संजरपुर, एक बीनापारा गांव तथा तीन अन्य स्थानों के रहने वाले हैं। इनके परिजन तथा अन्य कई स्थानीय लोग इस फैसले को उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में ध्रुवीकरण की भाजपा की कोशिश के तौर पर देखते हैं और इस निर्णय के समय पर सवाल उठा रहे हैं। बम धमाके के मामले में मौत की सजा पाए संजरपुर निवासी मोहम्मद सैफ के पिता शादाब अहमद ने शनिवार को कहा निचली अदालत पर वैसे भी हमें यकीन नहीं था। अब हम उसके फैसले को उच्च न्यायालय में जरूर चुनौती देंगे।ज्ज उन्होंने आरोप लगाया, च्च्ऐसा लगता है कि विधानसभा चुनाव में भाजपा को फायदा पहुंचाने के लिए इस वक्त यह फैसला सुनाया गया है। अदालत ने पिछले साल तीन सितंबर को इस मामले पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था, लेकिन उसे करीब पांच महीने बाद विधानसभा चुनाव के ठीक बीच में सुनाया जाना कई सवाल खड़े करता है। हालांकि सजा पाए बाकी लोगों के परिजन इस मामले पर कुछ भी बोलने से इनकार कर रहे हैं, लेकिन स्थानीय लोग अहमदाबाद बम धमाकों के मामले में निचली अदालत के फैसले के समय पर सवाल उठा रहे हैं। संजरपुर के निवासी अली अहमद ने कहा कि अदालत का फैसला ऐसे वक्त पर आया है कि इस पर सवाल खड़े होना लाजमी है। इस निर्णय के खिलाफ उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया जाना चाहिए। इस बीच, भाजपा अहमदाबाद बम धमाकों के मामले में निचली अदालत के फैसले को लेकर सपा पर हमलावर हो गई है।

सूरत जैसी घटना का गांधीनगर में पुनरावर्तन, एकतरफा आशिक का किशोरी पर हमला

गांधीनगर।

गुजरात की राजधानी गांधीनगर में सूरत की घटना का पुनरावर्तन हुआ है। गांधीनगर जिले की एक युवती पर एकतरफा आशिक ने कटर से गले पर हमला कर दिया। राहत की बात है कि सर्जरी कर किशोरी की जान बचा ली। फिलहाल किशोरी अस्पताल में उपचाराधीन है। जानकारी के मुताबिक गांधीनगर के लींबोदरा गांव में शुक्रवार को नाबालिग लड़की स्कूल में परीक्षा देने गई थी। उस वक्त लड़की के गांव में रहनेवाला संजय सेधाजी ठाकोर रास्ते में रोक लिया। संजय ने लड़की से कहा कि उसके चाचा बुला रहे हैं ऐसा बताकर उसे अपनी मोटर साइकिल पर बिठा लिया। लड़की को मोटर साइकिल पर बिठाकर संजय उसे अमरापुर नदी की ओर ले गया, जहां उसके साथ जबर्दस्ती करने लगा। नाबालिग लड़की ने जब विरोध किया तो संजय ने कटर से उसके गले पर हमला कर दिया और वहां से फरार हो गया। लहूलुहान होने के बावजूद किशोरी ने अपने चाचा को फोन किया। घटनास्थल पर पहुंचा किशोरी के चाचा ने एम्ब्युलैंस 108 को बुलाया।

एम्ब्युलैंस की टीम ने प्राथमिक उपचार कर गांधीनगर सिविल अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने 30 से अधिक टांके लेकर किशोरी की जान बचा ली। किशोरी की चाचा की शिकायत के आधार पर पुलिस ने आरोपी संजय ठाकोर को गिरफ्तार कर आगे की कार्यवाही शुरू की है। बता दें कि गत 14 फरवरी को सूरत के कामरेज क्षेत्र में ऐसी ही एक घटना में युवती की मौत हो गई थी। जिसमें एकतरफा प्यार में पागल फेनिल नामक शख्स ने सरेआम युवती का गला रेत कर हत्या कर दी थी। युवती को बचाने का प्रयास कर रहे उसके भाई और चाचा को भी घायल कर दिया था।

कांग्रेस के पूर्व विधायक हीराभाई पटेल अपने समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल होंगे

अहमदाबाद।

हाल ही में गुजरात प्रदेश कांग्रेस के जयराजसिंह परमार ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है और जल्द ही उनके भाजपा में शामिल होने की संभावना है। कांग्रेस इस झटके से उबरी नहीं थी कि उसके लिए एक बुरी खबर आ गई। महीसागर जिले के कांग्रेस नेता और पूर्व विधायक हीराभाई पटेल सोमवार को भाजपा का भगवा धारण कर लेंगे। वर्ष 200। से 2012 और 2012 से 201। तक दो बार कांग्रेस विधायक रहे हीराभाई पटेल आगामी सोमवार को गुजरात प्रदेश भाजपा मुख्यालय कमलम में सीआर पाटील की मौजूदगी में भाजपा जॉइन कर लेंगे। कांग्रेस से नाराज चल रहे हीराभाई पटेल कांग्रेस के लिए काम करने वाले सक्रिय कार्यकर्ता और पूर्व पदाधिकारियों समेत 200 जितने लोगों के साथ भगवा धारण करेंगे। 1968 से 2005 तक महीसागर जिले के लूणावाडा की पीएन कॉलेज में बतौर प्रोफेसर सेवारत रहे हीराभाई पटेल दो दफा तहसील पंचायत के प्रमुख भी रहे हैं। 1980 में छत्री के चिह्न पर जनता पार्टी से विधानसभा का चुनाव लड़ा, परंतु लूणावाडा के महाराजा धीरेन्द्रसिंह के खिलाफ 805 वोटों से हार गए। 1990 में जनता दल से विधानसभा का चुनाव में भी महाराजा धीरेन्द्रसिंह से 5000 वोटों से चुनाव हार गए। 1992 में चिमनभाई पटेल जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब हीराभाई पटेल ने कांग्रेस जॉइन की और पंचमहल जिला कांग्रेस समिति के उपाध्यक्ष बने तथा संगठन मजबूत करने में जुट गए। 1998 से 2006 तक पंचमहल जिला कांग्रेस समिति के प्रमुख रहे। जिलास्तर की सभी सहकारी संस्थाओं में निदेशक के तौर पर काम किया और आज भी कई संस्थाओं में काम कर रहे हैं। बता दें कि गुजरात कांग्रेस से इस्तीफा दे चुके जयराजसिंह परमार ने बीते दिन एक चौंकाने वाला ट्वीट किया था। इस ट्वीट में जयराजसिंह परमार ने लिखा था 'काली कलकत्ता वाली तेरा वचन न जाय खाली... पावागढ़ महाकाली के चरण स्पर्श कर के वाया लूणावाडा से कोबा.. गांधीनगर।' इसी के साथ जयराजसिंह परमार ने अपने ट्वीट में एपीसोड 2 का जिक्र किया था। अब इस ट्वीट को हीराभाई पटेल के साथ जोड़कर इसलिए देखा जा रहा है कि जयराजसिंह परमार को पहले से इसकी जानकारी थी और शायद इसीलिए उन्होंने अपने ट्वीट में 'लूणावाडा' का जिक्र किया था। हीराभाई पटेल के भाजपा में शामिल होने की खबर को जयराजसिंह परमार के ट्वीट से जोड़कर इसलिए देखा जा रहा है कि उन्हें इस बारे में पहले से भी पता था, इसलिए उन्होंने अपने ट्वीट में 'लूणावाडा' का उल्लेख किया था।

गुजरात में हेरिटेज और बॉर्डर टूरिज्म के नवीन आयाम विकसित करना चाहते हैं मुख्यमंत्री

अहमदाबाद ।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात में पर्यटन स्थलों व यात्राधामों के विकास तथा नए पर्यटन आकर्षण विकसित करने के लिए जारी कामकाज का विवरण अपने ब्लॉग में लिखकर जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। मुख्यमंत्री ने राज्य में चल रहे पर्यटन विकास के अनेक कार्यों विशेषकर कच्छ में आकार ले रहे राष्ट्रीय राजमार्ग और सीमावर्ती क्षेत्र में राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) की गतिविधियों की जानकारी का उल्लेख करते हुए अपने ब्लॉग में कहा कि कुछ दिनों पूर्व मुझे विश्व धरोहर स्थल (वर्ल्ड हेरिटेज साइट) की सूची में स्थान बनाने वाले और प्राचीन नगर संस्कृति की विरासत को समेटे कच्छ के धोलावीरा का दौरा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धोलावीरा में पुरातन समय की सुनियोजित नगर रचना, बरसाती पानी के संग्रहण के लिए जल संचयन के अद्भुत आयोजन तथा एक आधुनिक मानव बस्ती के लिए आवश्यक सभी व्यवस्थाओं को देखकर अभिभूत हुए बिना कोई नहीं रह सकता। मैंने इस प्राचीन धरोहर के अवशेषों, पुरातत्वीय चीजों तथा पौराणिक स्मृतियों को जहां सहेजकर रखा गया है उस म्यूजियम का दौरा किया और उस संबंध में एक प्रेजेंटेशन भी देखा। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि आने वाले दिनों में धोलावीरा पर्यटकों का नया नजराना बनेगा। राज्य सरकार ने भी इस प्राचीन विरासत के मूल सत्व और तत्व को कायम रखते हुए समयानुकूल विभिन्न विकास कार्यों का आयोजन किया है। धोलावीरा की लगभग 5000 साल पुरानी इस धरोहर की विशेषताओं और संस्कृति दर्शन की अनेक संभावनाओं एवं पर्यटकों को मिलने वाली जानकारी एवं सहूलियत में बढ़ोतरी कर गुजरात को दुनिया के पर्यटन मानचित्र में अंकित करने को गुजरात सरकार कटिबद्ध है। धोलावीरा के दौरे के दौरान गढुली-सांतलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग के निर्माण कार्य की प्रगति का भी निरीक्षण किया। कुल 264 किमी लंबे इस राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 754 K की चार लिंक में गढुली, धोलावीरा, कच्छ का सफेद रण तथा खावड़ा का समावेश होता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में केंद्र सरकार द्वारा लगभग 320 करोड़ रुपए की लागत से निर्माणाधीन इस राष्ट्रीय राजमार्ग के बनने से धोलावीरा से सफेद रण के बीच का अंतर लगभग 80 किलोमीटर घट जाएगा। इसके अलावा, धोलावीरा, सफेद रण, माता ना मढ, हाजी पीर दरगाह और खावड़ा भी सीधे राष्ट्रीय राजमार्ग की रोड कनेक्टिविटी से जुड़ जाएंगे। राष्ट्रीय राजमार्ग के जरिए करीब 100 बॉर्डर आउटपोस्ट को भी कनेक्टिविटी का रणनीतिक लाभ मिलेगा। मित्रों, कच्छ एवं बनासकांठा के प्राकृतिक रूप से पानी की कमी वाले सीमावर्ती क्षेत्रों तक और वहां डटे सरहद के संतरी हमारे जांबाज जवानों तक शुद्ध पेयजल पहुंचाने का भगीरथ प्रयास गुजरात सरकार ने शुरू किया है। माननीय श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी विचार का अनुसरण करते हुए सरहदी क्षेत्रों में एनसीसी का दायरा भी बढ़ाया जा रहा है। एनसीसी की गतिविधियां सरहद की युवा शक्ति में देश प्रेम, निर्भयता और शौर्य जैसे गुण विकसित कर सीमा पर देश विरोधी गतिविधियों पर अंकुश लगाने में अहम भूमिका अदा करेगी।

भारत में पहली बार प्रसिद्ध मेहंदी कलाकार मिरल पटेल के साथ आयोजित पोर्ट्रेट मेहंदी वर्कशॉप

सूरत।

मेहंदी को हर मौके पर शगुन का प्रतीक माना जाता है। हर पुरुष और महिला शुभ अवसरों पर मेहंदी लगाते हैं। समय के साथ, मेहंदी की कला में दैनिक आधार पर नए डिजाइन दिखाई देते हैं। इसके साथ ही लोग खूबसूरत डिजाइन और फिगर बनाते नजर आ रहे हैं। पहले के समय में लोग हाथ पर लोगों का नाम या पति का नाम लिखा करते थे।साथ ही यह पोट्रेट इस समय काफी चलन में है। तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन सूरत के ऑरेंज इंटरनेशनल होटल में पूरे भारत के जाने-माने मेहंदी कलाकार मिरल पटेल ने खुद एक मेहंदी कलाकार के रूप में अपनी प्रतिभा को फैलाने और सभी को इसे सीखने के उद्देश्य से किया था।

इस बारे में बात करते हुए श्रीमती मिरल पटेल ने कहा, ''मुझे खुद पर मेहंदी लगाने का बहुत शौक है। इससे मैं समय के साथ इसमें नए-नए इनोवेशन करता रहा हूं। इस बार हमने सूरत के लोगों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया है जिसमें बहुत अच्छे कलाकार शामिल हुए हैं। इसके साथ ही हमने उन्हें लाइव डेमो के साथ पोर्ट्रेट बनाना सिखाया है।

पोर्ट्रेट पेंटिंग एक विशिष्ट मानव विषय का प्रतिनिधित्व करने के उद्देश्य से पेंटिंग की एक शैली है।' पोर्ट्रेट पेंटिंगज शब्द एक वास्तविक चित्रित चित्र को भी संदर्भित कर सकता है।इस कला को आसानी से करने के लिए सभी के लिए पोर्ट्रेट वर्कशॉप का आयोजन किया गया है।

मुख्यमंत्री का नगर पालिका द्वारा वसूले जाने वाले टैक्स में राहत का ऐलान

अहमदाबाद । मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य के नगरों में रहने वाले नागरिकों के लिए आजादी का अमृत महोत्सव के इस वर्ष में 'आजादी का अमृत महोत्सव प्रोत्साहक वळतर' यानी करों में छूट की योजना शुरू करने का महत्वपूर्ण निर्णय किया है। मुख्यमंत्री ने राज्य की नगर पालिकाओं द्वारा नागरिकों को उपलब्ध कराई जाने वाली विभिन्न बुनियादी सेवाओं के लिए वसूले जाने वाले कर जैसे कि संपत्ति कर, सामान्य जल कर, विशेष जल कर, प्रकाश कर और गटर यानी सीवेज कर आदि के भुगतान में नागरिकों को सहूलियत और प्रोत्साहन देने के लिए यह नवीन दृष्टिकोण अपनाया है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने इस योजना के अंतर्गत यह निर्णय किया है कि यदि नागरिक वित्तीय वर्ष 2022-23 के कर की रकम का 31 मई, 2022 तक अग्रिम भुगतान करते हैं, तो उन्हें 10 फीसदी की छूट दी जाएगी। यही नहीं, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के डिजिटल इंडिया के संकल्प को तेजी देने के लिए श्री पटेल ने यह भी निर्णय किया है कि इन करों की रकम का मोबाइल एप या ई-नगर के ऑनलाइन पोर्टल के मार्फत 31 मई, 2022 तक भुगतान करने वाले नागरिकों को अतिरिक्त 5 फीसदी की छूट दी जाएगी, अर्थात डिजिटल ट्रांजेक्शन करने वाले नागरिकों को कुल 15 फीसदी छूट का लाभ मिलेगा। उन्होंने राज्य की नगर पालिकाओं के पहले के वर्षों के कर की बकाया राशि का भुगतान करने वाले नागरिकों को भी टैक्स भुगतान में सहूलियत दी है। तद्नुसार, भूपेंद्र पटेल ने यह निर्णय किया है कि जिन करदाता नागरिकों पर पहले के वर्षों का संपत्ति कर बकाया है, उसका भुगतान 31 मार्च, 2022 तक करने पर नोटिस फीस, ब्याज, पेनाल्टी और वारंट फीस की रकम सौ फीसदी माफ कर दी जाएगी। उल्लेखनीय है कि राज्य की नगर पालिकाओं की आय का मुख्य स्रोत करदाताओं से वसूल की जाने वाली कर की आय ही है। इस तरह विभिन्न करों से प्राप्त होने वाली आय को नगर पालिकाएं शहर के विकास कार्य और नागरिकों को आवश्यक सेवाएं उपलब्ध कराने संबंधी कार्यों पर खर्च करती हैं। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य की नगर पालिकाओं की आय में बढ़ोतरी हो साथ ही करदाताओं को भी कर भुगतान में आसानी रहे एवं प्रोत्साहन मिले, ऐसे उदार भाव से यह 'आजादी का अमृत महोत्सव प्रोत्साहक वळतर' योजना क्रियान्वित करने का नागरिक हितैषी निर्णय किया है।

नाबालिग लड़की को युवक पंजाब भगा ले गया, दुष्कर्म के बाद छोड़कर हुआ फरार

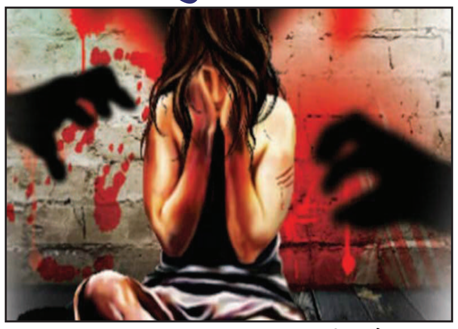

अहमदाबाद।

शहर के आनंदनगर क्षेत्र की एक नाबालिग लड़की अपने प्रेमजाल फांस कर युवक उसे पंजाब भगा ले गया। जहां उसके साथ दुष्कर्म किया और बाद में अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर छोड़कर फरार हो गया। आनंदनगर पुलिस ने अपहरण और पोक्सो के तहत केस दर्ज कर आरोपी युवक की तलाश शुरू की है। जानकारी के मुताबिक अहमदाबाद के आनंदनगर क्षेत्र में रहनेवाली 11 वर्षीय किशोरी कुछ दिन पहले स्कूल जाने के लिए घर से निकली थी। लड़की पिता किसी सामाजिक प्रसंग में शामिल होने अपने गांव गए थे।

आमतौर पर किशोरी दोपहर 12.30 बजे तक स्कूल से घर लौट आती थी। उस दिन उसके घर नहीं लौटने पर परिवार के अन्य सदस्यों ने उसकी खोजबीन शुरू कर दी। परंतु उसका कहीं पता नहीं चला। गांव से लौटे पिता को जब बेटी के लापता होने का पता चला तो वह स्कूल पहुंच गए। जहां पता चला कि उनकी बेटी स्कूल गई ही नहीं थी। बाद में पिता ने आनंदनगर पुलिस थाने में बेटी के लापता होने की शिकायत दर्ज करवा दी। जिसके आधार पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी और उसमें पता चला कि किशोरी अपने 18 वर्षीय प्रेमी के साथ पंजाब के लुधियाणा गई है। पुलिस किशोरी को लेने लुधियाना पहुंची और इधर युवक अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर किशोरी को छोड़कर फरार हो गया।

किशोरी से पूछताछ में पता चला कि युवक उसे अपने प्रेमजाल फांसकर पंजाब ले गया था, जहां उसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाए। इस खुलासे के बाद पुलिस ने अपहरण और पोक्सो के तहत युवक के खिलाफ केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू की है।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)